क्रियात्मक अनुसन्धान

सत्र – 2014–15

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य की आवश्यकता है। अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण एवं सविचार प्रक्रिया है इसका उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाना और परिमार्जित कर उपयोगी बनाना है। क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यवहारिक कार्यकर्त्ता वैज्ञानिक विधि से अपनी समस्याओं का अध्ययन अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन, सुधार और मूल्याकंन करते है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से शिक्षक अपने स्तर पर भी शैक्षणिक कार्य में आने वाली समस्याओं का समुचित समाधान कर सकते हैं जिससे विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। क्रियात्मक शोध के द्वारा शिक्षण कार्य के दौरान समस्या का चयन व समाधान की दिशा में कार्य किया जाता है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य यह है कि सभी क्रियात्मक शोध के प्रति जागरूक हो।

इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए सत्र 2014–15 में बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज की व्याख्याताओं द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान पर अपने–अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। व्याख्याताओं द्वारा शोधपत्र में प्राकल्प शीर्षक, अनुसन्धानकर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उद्देश्य, प्राकल्प का महत्त्व, समस्या का क्षेत्र, समस्या का विशिष्ट रूप, समस्या के तथ्यों का विश्लेषण, क्रियात्मक परिकल्पना, क्रियात्मक परिकल्पना की सार्थकता के लिए रूपरेखा, मूल्याकंन आदि का उल्लेख किया गया। शोधपत्र जो प्रस्तुत किये गये उनका विवरण इस प्रकार है :–

क्र0 सं0	शोधकर्त्री	क्रियात्मक अनुसंधान का शीर्षक
1	डॉ. शिप्रा गुप्ता	छात्रों के द्वारा की जाने वाली हिन्दी विषय में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ
2	श्रीमती मालती सक्सेना	राजनीतिक विज्ञान की कालांश से छात्रों का विद्यालय से भाग जाना
3	श्रीमती आरती गुप्ता	Performing study for improving drawing ability and skill in geometry class.
4	श्रीमती तृप्ति सैनी	छात्रों द्वारा खेलकूद में भाग न लेने की समस्या
5	श्रीमती भारती शर्मा	कक्षा 11 के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की प्राणी विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष में प्रयोग करने में अरूचि की प्रवृति का अध्ययन करना

डॉ. शिप्रा गुप्ता (रीडर)
विभागाध्यक्ष –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या

(1) समस्या– छात्रों के द्वारा की जाने वाली हिन्दी विषय में वर्तनी संबन्धी अशुद्धियाँ।

(2) समस्या का सीमांकन – विद्यालय का नाम कक्षा 8 के छात्रों द्वारा हिन्दी विषय में की जाने वाली वर्तनी संबन्धी अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास करना।

2. संभावित कारण :–

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारा हिन्दी विषय के लिखित कार्य में लापरवाही करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं का अवलोकन।
2.	छात्रों में शब्द पहचान की योग्यता में कमी।	अवलोकन परीक्षण व साक्षात्कार।
3.	लिखित वर्तनी कार्यों में त्रुटियाँ।	अभ्यास पुस्तिकाओं का अवलोकन।
4.	अभ्यास पुस्तिकाओं में अध्यापक द्वारा लिखित गलत वर्तनी की त्रुटियों को ठीक न करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं के द्वारा अवलोकन।
5.	त्रुटियाँ करने पर छात्र को दण्डित न करना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता।

3. क्रियात्मक परिकल्पना :–

(1) छात्रों को हिन्दी विषय का लिखित कार्य विधिवत् ढंग से कराने व जाँच करने पर हिन्दी विषय में उनकी वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ कम हो जायेगी।

(2) छात्रों को हिन्दी में शब्दों की पहचान का प्रशिक्षण देने पर हिन्दी में उनकी वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ कम हो जायेगी।

(3) अध्यापक के द्वारा छात्रों की हिन्दी विषय की अभ्यास पुस्तिकाओं में वर्तनी की अशुद्धियों को ठीक करने पर वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ कम हो जाएगी।

(4) छात्रों के द्वारा अशुद्धियाँ करने पर अध्यापक द्वारा उन्हें दण्ड देने पर वर्तनी की अशुद्धियाँ कम हो जाएगी।

4. क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि छात्रों को हिन्दी का लिखित कार्य विधिवत् ढंग से कराने से हिन्दी विषय में उनकी वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ कम हो जायेगी। परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता हैं।

क्रं..	क्रियाएँ	विधि	समग्री	अवधि
1.	हिन्दी विषय में किये जा सकने वाले लिखित कार्यों की सूची तैयार करना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तकें	एक सप्ताह
2.	अनुसंधान हेतु लिखित कार्यों का चयन करना।	शिक्षण अधिगम क्रिया–कलापों की विवेचना करके।	समय सारणी	एक सप्ताह
3.	चयनित लिखित कार्यों को एक–एक करके देखना।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके।	समय सारणी	एक सप्ताह
4.	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों को क्रियान्वित करना	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके	समय सारणी	एक सप्ताह

5. परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से वर्तनी की अशुद्धियों में कमी आई हैं। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता हैं।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट हैं। कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा की जाने वाली हिन्दी विषय में अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता हैं।

यदि प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से सकारात्मक परिणाम नहीं मिलते तो दूसरी, तीसरी इसी प्रकार आगामी परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सकता हैं।

श्रीमती मालती सक्सेना
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

समस्या का चुनाव –

राजनीतिक विज्ञान को कालांश से छात्रो का विधालय से भाग जाना।

समस्या का सीमांकन –

राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय मानसरोवर जयपुर के कक्षा –12 के छात्रो का राजनीतिक विज्ञान के कालांश से विधालय से भाग जाने का कारणो का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।

सम्भावित कारण –

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1.	विधालय में राजनीति विज्ञान विषय का शिक्षक का अभाव	छात्रो का कक्षा में अन्तः क्रिया ना करना
2.	शिक्षक द्वारा पढाने में रूचि ना लेना	शिक्षक को पाठ्यक्रम का अवलोकन करना
3.	विधार्थियो का पढाई में रूचि ना लेना	छात्रो व शिक्षको के मध्य शिक्षण व्यवस्था का अवलोकन करना
4.	विधालय से भाग जाने पर दव्डित ना करना।	छात्रो व शिक्षको से वार्ता करना

क्रियात्मक परिकल्पना –

1. विधालय में राजनीति विज्ञान विषय के लिए अच्छे व्याख्यता की व्यवस्था करना जिससे विधालय में विषय अध्यापक का अभाव ना हो।
2. शिक्षक को अपने विषय की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर उसे नयी–नयी विधियो के माध्यम से तैयार करने पर शिक्षक उसे पढाने मे रूचि लेगा।
3. विधार्थियो का पढाई में रूचि लाने के लिए शिक्षको को नयी–नयी विधियो से पढाना हो तथा बीच – बीच में मनोरंजन करके पढाने से छात्र पढाई में रूचि लेगा।
4. विधार्थियो का विधालय से भाग जाने पर उन्हे इस सम्बंध में दण्डित करना और अन्य अध्यापको से बात कर कारण का हल निकालने पर विधार्थीयों को विधालय से भाग ने से रोका जाए।

क्रियात्मक अभिकल्प –

प्रथम क्रियात्म्क परिकल्पना में शिक्षक को अपने विषय की पूर्ण जानकारी होने पर उसे रूचि लेकर पाठ–योजना पढाने के लिए एक परिक्षण तैयार किया गया।

क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
अध्यापक को पाठ्यवस्तु की पाठ योजना तैयार करना	पाठ्य योजना द्वारा पढाना	पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तके	एक सप्ताह
क्रियात्मक अनुसंधान हेतू पाठ्यपुस्तक से इकाई का चयन करना	व्याख्या करके सरल शब्दो मे पढाना	पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तके	एक सप्ताह
चयनित इकाई को निर्धारित समय में पूर्ण करना	उदाहरण व व्याख्या करना	पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तके	एक सप्ताह
परिकल्पना मे अभिकल्प के सुझाव का क्रियान्वयन	उदाहरण व व्याख्या करना	पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तके	एक सप्ताह

परिणाम –

परिकल्पना में वर्णित सुझावो से पाठ्य पुस्तक में रूचि लेकर ना पढाने से छात्रो के भाग जाने अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

निष्कर्ष –

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपान के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावो को लागू करने पर शिक्षको द्वारा पाठ योजना पढाने में रूचि लेंगें अतः इन उपायो से छात्रो का विधालय से भाग जाने पर रोका जा सकता है।

Ms. Arti Gupta
Assistant Professor
Biyani Girls B.Ed. College

ACTION RESEARCH

1.PROBLEM OF ACTION RESEARCH:-

(1) Problem:-performing study for improving drawing ability and skills in geometry class.

(2) Area of the problem:- the students of class 9^{th} studying in government senior secondary school Begus, Jaipur, Rajasthan

2. POSSIBLE CAUSES:-

S.NO.	CAUSES	EVIDENCE
1	Students do not use geometry box in geometry class	By observation
2	The topic is not interesting for the students	By observing and examining of students work
3	Teacher does not use interesting media, methods and techniques in teaching geometry	By self evaluation
4	Students do not like the subject because they think it is a difficult one	By enquiring the students
5	Students do not pay more attention towards	By examining the sound of students knowledge

3. HYPOTHESIS OF ACTION RESEARCH:-

Under this process often these facts are included written as under

1. The problem may be solved by making use of geometry box compulsory in geometry class

2. This problem may be solved if the teacher use interesting media ,methods and techniques in geometry class
3. This problem may be solved if teacher use new ideas and teaching aids according to students interest and level
4. This problem may be resolved by organise a special lecture on importance of geometry and mathematics in our daily life
5. This problem may be solved if teacher can make students visualizing their ideas clearly based on their own imagination and experiences of life to convince the students that it's a interesting subject

4. DESIGN FOR THE VERIFICATION OF ACTION RESEARCH HYPOTHESIS

S.no.	Action-the work which is to be started	Method	Expectant medium	Duration
1	Find out how many students do not have geometry box in geometry class	Make a list of it	By asking the students	1 day
2	The students who do not have geometry box teacher ask to purchase it	Teacher can suggest a good geometry box name	Write a note in dairy for parents	3 days
3	School management can sponser the poor students for geometry box	Make a list of poor students	Teacher talk to the administration about this	5 days
4	Teacher gives direction to the students about how to use geometry box	Making sure that every student have geometry box	Teacher can punish the students who do not have geometry box in class	7 days

EVALUATION:-

By applying this hypothesis solutions in geometry class , there is good improvement in students drawing ability and skills. So this hypothesis can be accepted.

श्रीमती तृप्ति सैनी
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु किया गया शोध

1. क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या :–

- समस्या : – छात्रों द्वारा खेलकुद में भाग न लेने की समस्या
- समस्या का सीमांकन :–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बैरिया हरनाथपुरा, झोटवाड़ा, जयपुर(राज.)कक्षा – 8 के छात्रों द्वारा शारीरिक शिक्षा के अन्तर्गत खेलकूद में भाग नहीं लेना।

2. संभावित कारण :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक की खेल गतिविधियों के प्रति उदासीनता।	छात्रों व शिक्षक के मध्य बातचीत से
2.	छात्रों की शारीरिक शिक्षा की जागरूकता में कमी	अवलोकन व साक्षात्कार
3.	विद्यालय में पर्याप्त सुविधाऐं तथा खेलकुद मैदान उपलब्ध ना होना।	विद्यालय कीसुविधाओं का अवलोकन
4.	विद्यालय द्वारा खेलकुद प्रतियोगिताओं का आयोजन न करना ।	विद्यालय के कार्यों का अवलोकन
5.	छात्रों को खेलकुद के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध न करना।	समय सारणी का अवलोकन

3. क्रियात्मक परिकल्पना :–

- शिक्षक की खेल गतिविधियों के प्रति उदासीनता को कम करके छात्रों द्वारा खेलकुद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों में शारीरिक शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाके खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।
- खेलकुद की सभी साधन व सुविधाएँ उपलब्ध कराके छात्रों में खेलकूद में भाग लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।
- विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन करके छात्रों में खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।

- छात्रों को खेलकूद के लिए पर्याप्त समय उपलब्ध कराके खेलकूद में भाग न लेने की समस्या को कम किया जा सकता है।

4. **क्रियात्मक अभिकल्प** :—प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि छात्रों को खेलकूद से हमारे स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पडता है तथा यह हमारे स्वास्थ्य के लिए कितना आवश्यक है का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्र.स.	क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1.	खेलकुद हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक इसकी सूची तैयार करना।	सहयोगियों से विचार विमर्श करना।	पाठ्यक्र पाठ्यपुस्तकें	एक सप्ताह
2.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु खेलकुद की आवश्यकताओं का चयन करना।	शिक्षा—अधिगम क्रियाकलापों को विवेचना करके सहयोगियों से विचार विमर्श करके	समय सारणी	एक सप्ताह
3.	आवश्यकताओं के क्रम का निर्धारण चयनीत लिखित कार्यों को एक एक करके देखना	शिक्षा—अधिगम क्रियाकलापों को विवेचना करके सहयोगियों से विचार विमर्श करके	————	एक सप्ताह
4.	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों का क्रियान्वयन करना।	——	——	तीन सप्ताह

5. **परिणाम** :—परिकल्पना में वर्णित सुझावों में खेलकुद के प्रति छात्रों की रूचि उत्पन्न हुई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :—क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपनों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों में खेलकुद के प्रति जागरूकता तथा रूचि उत्पन्न करना।

श्रीमती भारती शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या :–** कक्षा 11 के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की प्राणी विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष में प्रयोग करने में अरूचि की प्रवृति का अध्ययन करना।

2. **समस्या का सीमांकन :–** रा. उ. मा. वि., मुरलीपुरा, जयपुर के कक्षा – 11 वीं के विद्यार्थियों की प्रयोगशाला जीव विज्ञान के कक्ष में प्रयोग करने में अरूचि दिखाना।

क्र.स.	संभावित कारण	साक्ष्य
1.	विषय अध्यापक प्रयोगशाला में प्रयोग हेतु विद्यार्थियों पर बल नहीं देते।	शिक्षक का अनुभव
2.	प्राणी विज्ञान प्रयोगशाला में उचित प्रादर्शो का अभाव	शिक्षक का अनुभव
3.	विद्यार्थियों हेतु प्रयोगशाला में उचित अध्ययन सामग्री का अभाव	शिक्षक द्वारा स्वयं छात्रों से पूछताछ कर पता लगाया।
4.	विद्यालय में प्रयोगशाला में जाने हेतु कालांश ना होना।	अध्यापक के अनुभव पर आधारित

क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को जीव–विज्ञान प्रयोगशालाा कक्ष में प्रयोग करने हेतु उचित मार्गदर्शन एवं बल देने पर विद्यार्थी प्रयोगशाला में प्रयोग करने में रूचि दिखायेंगे।
2. विद्यालय में प्राणी विज्ञान से संबंधित प्रादर्शो की सही व्यवस्था करवाकर छात्रों में प्रयोगशाला में प्रयोग करने की रूचि को विकसित किया जा सकता है।
3. प्रयोगशाला कक्ष मे उचित अध्ययन सामग्री की व्यवस्था करवाकर विद्यार्थियों द्वारा प्रयोगशाला में प्रयोग की रूचि विकसित की जा सकती है।
4. विद्यालय में प्रयोगशाला में प्रयोग हेतु अतिरिक्त कालांश लगाकर भी छात्रों में प्रयोगशाला में प्रयोग हेतु रूचि विकसित की जा सकती है।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना में शिक्षको द्वारा विद्यार्थियों को प्रयोगशाला का महत्व बताकर तथा प्रयोगशाला मे प्रयोग हेतु बल देकर उनकी प्रयोगशाला मे प्रयोग करने मे अरूचि को दूर किया जा सकता है का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1. शिक्षक विद्यार्थियों को प्रयोगशाला कक्ष के बारे मे जानकारी देगा तथा उसका महत्व बताएगा।	सहयोगियों के विचार विमर्श से	पाठ्य पुस्तक	1 दिन
2. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु विद्यालय में उचित प्रयोगशाला कक्ष की व्यवस्था करवायेगा।		सूची	1 सप्ताह
3. विद्यार्थियों के अनुरूप प्रयोगशाला कक्ष के आवश्यक सामग्री जैसे – पुस्तकें, प्रादर्श :– जैसे – पाइला, स्कॉलिओडॉन और प्रयोगशाला उपकरण, सुक्ष्मदर्शी, पेट्रीडिश आदि की व्यवस्था करवायेगा	शिक्षण अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके	सूची	1 सप्ताह
4. विद्यालय में प्रयोगशाला हेतु कालांश लगवायेगा तथा सभी विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में प्रयोग करने हेतु भेजा जायेगा।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	समय सारणी	2 दिन
5. परिकल्पना में अभिक्रमित सुझावों को क्रियांवित करना।	सूची सारणी एवं विश्लेषण		1 दिन

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से विद्यार्थियों की प्रयोगशाला कक्ष मे प्रयोग करने की प्रवृति में विकास हुआ है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर विद्यार्थियों में विकास हुआ है। अतः इन उपायो को विद्यार्थियों की प्रयोशाला में प्रयोग करने में अरूचि दिखाने की प्रवृति को दूर करने हेतु प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

क्रियात्मक अनुसन्धान
सत्र – 2015–16

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य की आवश्यकता है। अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण एवं सविचार प्रक्रिया है इसका उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाना और परिमार्जित कर उपयोगी बनाना है। क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यवहारिक कार्यकर्त्ता वैज्ञानिक विधि से अपनी समस्याओं का अध्ययन अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन, सुधार और मूल्याकंन करते है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से शिक्षक अपने स्तर पर भी शैक्षणिक कार्य में आने वाली समस्याओं का समुचित समाधान कर सकते हैं जिससे विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। क्रियात्मक शोध के द्वारा शिक्षण कार्य के दौरान समस्या का चयन व समाधान की दिशा में कार्य किया जाता है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य यह है कि सभी क्रियात्मक शोध के प्रति जागरूक हो।

इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए सत्र 2015–16 में बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज की व्याख्याताओं द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान पर अपने–अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। व्याख्याताओं द्वारा शोधपत्र में प्राकल्प शीर्षक, अनुसन्धानकर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उद्देश्य, प्राकल्प का महत्त्व, समस्या का क्षेत्र, समस्या का विशिष्ट रूप, समस्या के तथ्यों का विश्लेषण, क्रियात्मक परिकल्पना, क्रियात्मक परिकल्पना की सार्थकता के लिए रूपरेखा, मूल्याकंन आदि का उल्लेख किया गया। शोधपत्र जो प्रस्तुत किये गये उनका विवरण इस प्रकार है :–

क्र0 सं0	शोधकर्त्री	क्रियात्मक अनुसंधान का शीर्षक
1	डॉ. शिप्रा गुप्ता	छात्र/छात्राओं द्वारा हिन्दी विषय में संधि में योग सम्बन्धी अशुद्धि करना।
2	श्रीमती मालती सक्सेना	छात्रों का विद्यालय से भागना
3	श्री मनीष सैनी	छात्रों द्वारा मानचित्र का उपयोग न करना
4	श्रीमती आरती गुप्ता	छात्रों द्वारा विद्यालय के नियमों का उल्लघंन करना
5	श्रीमती भारती शर्मा	छात्रों की कक्षा कालांश में अनुपस्थिति

6	श्रीमती मीनाक्षी शर्मा	माध्यमिक स्तर के छात्रों की अंग्रेजी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों की समस्या
7	श्रीमती सुनीता शर्मा	छात्रों द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों का उपयोग न करने
8	श्रीमती सुनीता कु0 शर्मा	संगीत कक्ष में विद्यार्थियों द्वारा वाद्य यंत्रों का प्रयोग न करने के कारण स्वंय, लय, ताल रहित अभ्यास के प्रशिक्षण को रोकने का अध्ययन
9	श्रीमती राजू पंसारी	इतिहास के कालांश में छात्रों का विद्यालय से भाग जाना
10	श्रीमती तृप्ति सैनी	छात्रों द्वारा वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धि करना

डॉ. शिप्रा गुप्ता (रीडर)
विभागाध्यक्ष –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

(1). क्रियात्मक अनुसंधान की समस्याः– छात्र/छात्राओं द्वारा हिंदी विषय में संधि में योग शब्द संबंधी अशुद्धि करना।

(2). समस्या का सीमांकनः– राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, बजाज रोड़ सीकर, राज. के कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी के संधि शब्दों का अशुद्ध उच्चारण।

(3). **संभावित कारण–**

1. शिक्षकों ने अभी तक हिंदी विषय में उचित संशोधन पर ध्यान नहीं दिया।	शिक्षक का अनुभव
2. शिक्षकों द्वारा वर्णो का पर्याप्त अभ्यास न करवाया	पठन द्वारा पुष्टि
3. स्थानीय बोलियों का प्रभाव	शिक्षक का अनुभव
4. पाठ पढ़ाते समय अध्यापक द्वारा उचित शिक्षण विधि का प्रयोग न किया जाना	शिक्षक का अनुभव

(4). **क्रियात्मक परिकल्पनाः–**

1. शिक्षकों द्वारा हिंदी विषय में उचित संशोधन ध्यान देकर संधि संबंधी अशुद्धि को कम किया जा सकता है।
2. वर्णो का पर्याप्त अभ्यास करवा कर संधि अशुद्धि को कम करवाया जा सकता है।
3. सही उच्चारण करवा कर बोलियों के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
4. पाठ पढ़ाते समय शिक्षक द्वारा उचित शिक्षण विधि के प्रयोग द्वारा अशुद्धि को कम किया जा सकता है।

क्रियात्मक अभिकल्पः–

प्रथम क्रियात्मक अभिकल्प से विद्यार्थियों में अधिक से अधिक शैक्षिक अभ्यास का विकास होगा। इससें कार्य पद्धति में सुधार होगा और भाषागत उपलब्धि का अध्ययन व उन्नयन के के लिए क्रियात्मक अभिकल्प की निम्न ढंग से किया जा सकता है।

क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1. शिक्षक अशुद्ध उच्चारण करने वाले विद्यार्थियों की सूची बनायेगा।	व्याकरण उच्चारण विधि	संबंधित विषय वस्तु	2 दिन
2. शिक्षक द्वारा श्रुति लेख लिखवाया जायेगा व शब्दों के शुद्ध व अशुद्ध रूप श्यामपट्ट पर लिख कर पहचान करवायेगा।	अवलोकन विधि	शुद्ध व अशुद्ध शब्दों की सूची	प्रति सप्ताह 2 दिन व्याकरण
3. हिंदी विषय की उत्तर पुस्तिकाओं में उचित संशोधन पर ध्यान दिया जायेगा।	निरीक्षण विधि	उत्तर पुस्तिका	प्रति सप्ताह 3 दिन
4. शुद्ध शब्दों की प्रतियोगिता करवाई जायेगी व सर्वोच्च अंक वाले को पारितोषित दिया जायेगा।	शिक्षक द्वारा पर्यवेक्षण व मूल्यांकन	उत्तर पुस्तिका तथा पारितोषित सामग्री	प्रति सप्ताह 1–1 दिन

परिणामः–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से विद्यार्थियों ने हिंदी में संधि में योग शब्दों का उच्चारण व लेखन सही करना आरम्भ कर दिया है।

सामान्य निष्कर्षः–

उपरोक्त क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर विद्यार्थियों की संधि शब्दों में रूचि में वृद्धि हुई है। अतः इन उपायों को बालकों की संधि में योग शब्दों में अशुद्धि को दूर करने हेतु प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती मालती सक्सेना
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

योजना का शीर्षक – छात्रो का विधालय से भागना

प्रकल्प की पृष्ठभूमी – छात्र विधालय से विना छुटटी लिए भाग जाते है क्योकि मनोरंजन के साधनो का अभाव व छात्रो के घूमने – फिरने का आदत होती हैं।

प्रस्तावित अनुसंधान का उद्देश्य –

1. छात्रो में शैक्षिक – भ्रमण की व्यवस्था करना।
2. खेलकुद व प्रतियोगिताएँ आयोजित करना।
3. फिल्म दिखाने की व्यवस्था करना।
4. कक्षा में विषय वस्तु को रूचिकर बनाना।

विद्यालय के लिए प्रकल्प का महत्व :–

विद्यालय में मनोरंजन के साधनो की व्यवस्था से विषय वस्तु को रूचिकर बनाने से छात्रों को रोका जा सकता है अनुशासन बनाया जा सकता है।

समस्या का विशिष्ट रूप :–

कक्षा 10 के छात्रों का विद्यालय से भाग जाना।

समस्या के कारणो का विश्लेषण :–

कारण	साक्षियाँ	तथ्य तथा अनुमान	शोधकर्ता का नियंत्रण
1. शिक्षक मनोरंजन के साधनो का उपयोग नही करते।	शिक्षक का अनुभव	तथ्य	शिक्षक के नियंत्रण के अन्तर्गत है।
2. कक्षा में छात्रों का अकेलापन महसुस करना।	मित्रो का न होना।	तथ्य	शिक्षको के नियंत्रण में है भी तथा नही भी
3. छात्रो में पढने की रूचि का ना होना	शिक्षक छात्रो से कक्षा में पुछताछ द्वारा रूचिकर बनाना।	अनुमान	शिक्षक के नियंत्रण के अन्तर्गत है।
4. शिक्षकों द्वारा शैक्षिक भ्रमण की व्यवस्था न करना।	छात्रो की प्रवृति का अध्ययन करना।	तथ्य	शिक्षक के नियंत्रण के अन्तर्गत है।

क्रियात्मक परिकल्पना :–

क्रियात्मक अनुसंधान की परिकल्पनाओं का प्रतिपादन कारणों के विश्लेषण के आधार पर किया जाता है।

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना :–

विद्यालय में छात्रो को बनाए रखने के लिए मनोरंजन के साधन उपलब्ध कर उनमें रूचि उत्पन्न की जा सकती है।

द्वितीय क्रियात्मक परिकल्पना :–

विद्यालय में खेल प्रतियोगिताएँ रखकर व अन्य कई प्रकार की प्रतियोगिताए रखकर विद्यालय से भागने वाले छात्रों में सुधार किया जा

क्रियात्मक परिकल्पना की सार्थकता के लिये रूपरेखा :–

क्रियात्मक अनुसन्धान में परिकल्पना की सार्थकता के लिए अलग–अलग रूपरेखायें प्रयुक्त की जाती हैं। प्रथम परिकल्पना की सार्थकता के लिये प्रयुक्त की गई रूपरेखा निम्नलिखित है –

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की सार्थकता के लिए रूपरेखा

कार्यारम्भ (बिन्दु)	विधि	आपेक्षित साधन	समय
1. कौन–कौन छात्र अकेलापन महसूस करता है।	अध्यापक कक्षा में छात्रों से पूछकर सूची तैयार करेगा।	पूछताछ	एक दिन
2. छात्रों को एक–दूसरे से बातचीत कर मित्रता करने के लिए कहा जाएगा।	मित्रता करवाएगा।	अभिभावकों को उसे समझाने व मित्रता रखने के लिए कहा जाएगा।	तीन दिन
3. भागने वाले छात्रों के लिए मनोरंजन के साधन उपलब्ध करवाए जाएगें।	भागने वाले छात्रों की सूची तैयार करेगा।	प्रधानाचार्य से मनोरंजन के साधन उपलब्ध करवाने की व्यवस्था का आग्रह करेगा।	
4. विद्यालय में मनोरंजन के साधनों का प्रयोग करने का निर्देश दिया जायेगा।	अध्यापक विद्यालय में मनोरंजन के साधनों का निरीक्षण करेगा।	विद्यालय में सभी छात्रों को मनोरंजन के साधनों का उपयोग करने के लिए कहा जायेगा।	एक सप्ताह

मूल्यांकन :–

क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टि के लिये प्रदत्तों का संकलन भी करेगा। शिक्षक–निरीक्षण, अनुमति सूची, प्रश्नावली तथा परीक्षा की सहायता से प्रदत्तों का संकलन करेगा। प्रदत्तों के विश्लेषण से निष्कर्ष निकालने का प्रयास करेगा।

अनुसन्धानकर्त्ता की टिप्पणी :–

क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टिकरण के लिए छात्रों को निष्पत्ति परीक्षाओं को प्रयुक्त किया जा सकता है। विद्यालय में छात्रों की सुविधा तथा रूचि के सम्बन्ध में निर्णय ले सकता है। विद्यालय में छात्रों के रूकने की प्रवृत्ति में सुधार हुआ है, अथवा नहीं इस सम्बन्ध में निर्णय ले सकता है।

श्री मनीष सैनी
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. समस्या का चुनाव – छात्रों द्वारा मानचित्र का उपयोग न करना।
समस्या का सीमांकन – राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय रामपुरा, जयपुर के कक्षा 8 के छात्रों द्वारा सामाजिक विज्ञान के कालांश में मानचित्र का उपयोग न करने के कारण का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।

2. संभावित कारण –

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	विद्यालय में आवश्यक मानचित्रों का आभाव	शिक्षक का अवलोकन
2.	विद्यार्थियों का मानचित्र उपयोग में रूचि न लेना	छात्रों का कक्षा में अन्तः क्रिया न करना
3.	शिक्षक की मानचित्र उपयोग के प्रति उदासीनता	छात्रों व शिक्षक के मध्य बातचीत से
4.	मानचित्र उपयोग न करने पर छात्रों को दण्डित ने करना	शिक्षक का अवलोकन

3. क्रियात्मक परिकल्पना –

- विद्यालय में आवश्यक मानचित्रों की व्यवस्था की जाये ताकि छात्रों में मानचित्र का उपयोग किया जा सकता है।
- शिक्षक विद्यार्थियों में मानचित्रों के बारे में रूचि जाग्रत करना ताकि छात्र मानचित्र का उपयोग कर सके।
- प्रयोगशाला में मानचित्रों के महत्व को बताना ताकि मानचित्रों का उपयोग किया जा सकें।
- प्रयोगशाला से भाग जाने पर छात्रों को दण्डित करना चाहिए और समझाना चाहिए ताकि छात्र सामाजिक विज्ञान विषय में मानचित्रों का उपयोग कर सकें।

1. **क्रियात्मक अभिकल्प –** क्रियात्मक अभिकल्प में छात्रों को सामजिक विज्ञान विषय के कालांश में मानचित्र का उपयोग न करने की जाँच करने पर मानचित्र का उपयोग न

करने की कठिनाईयाँ की हो जायेगी। छात्रों का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गय क्रियात्मक अभिकल्प को निमन ढंग से लिखा जा सकता है।

क्र.स.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1	सामाजिक विषय में प्रयोग किये जाने वाले मानचित्रों की सूची तैयार करना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	पाठ्यक्रम एवं प्रयोगशाला में मानचित्र	1 सप्ताह
2	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु मानचित्रों का चयन करना।	शिक्षण–अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके	समय सारणी	2 सप्ताह
3	चयनित मानचित्रों के कार्यो का क्रम से निर्धारित करना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	.सूची व सारणी	1 सप्ताह
4	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों को क्रियान्वित करना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके।	समय सारणी	1 सताह

5. परिणाम – परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्रों में सामाजिक विज्ञान विषय में मानचित्र का उपयोग न करने की प्रवृति में कमी आई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

6. निष्कर्ष – क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि सभी परिकल्पनाओं के रू‍प में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों का मानचित्र का उपयोग न करने पर इनके माध्यम में सुधार किया गया है। अतः इन उपायों को सामाजिक विज्ञान विषय के कालांश में छात्रों का मानचित्र उपयोग न करने की प्रवृति को दूर करने के लिए प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती आरती गुप्ता
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु किया गया शोध

1. **क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या**– छात्रों द्वारा विद्यालय के नियमों का उल्लंघन करना।

2. **समस्या का सीमांकन**– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मुरलीपुरा स्कीम में कक्षा 10 के छात्रों द्वारा विद्यालयों के नियमों का पालन न करना।

3. **सम्भावित कारण–**

क्रम संख्या	कारक	साक्ष्य
1.	विद्यालय में प्रशिक्षित अध्यापकों का अभाव होना।	विद्यालय के स्टाफ का रिकॉर्ड।
2.	विद्यालय का वातावरण अच्छा नहीं होना।	विद्यालय का निरीक्षण।
3.	अध्यापकों का नियमित कक्षा में नहीं आना।	छात्रों से पूछताछ।
4.	विद्यालय में मनोरंजन के साधनों का अभाव होना।	विद्यालय का निरीक्षण।

क्रियात्मक परिकल्पना–

1. विद्यालय में प्रधानाध्यापक द्वारा प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति कर छात्रों को विद्यालय के नियमों का पालन करवाया जा सकता है।
2. अध्यापकों द्वारा विद्यालय के वातावरण में सकारात्मकता लाकर विद्यालय के वातावरण को अच्छा बनाया जा सकता है।
3. अध्यापक द्वारा नियमित कक्षा में आकर विद्यालय के नियमों एवं अनुशासन से अवगत कराया जा सकता है।
4. शिक्षक द्वारा विद्यालय में मनोरंजन के साधन उपलब्ध करवाकर विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है।

क्रियात्मक अभिकल्प–

प्राथमिक परिकल्पा की विद्यालय में प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति कर छात्रों को विद्यालय के नियमों का पालन करवाया जा सकता ह, का परीक्षण करने के लिए तैयार किए गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढ़ंग से लिखा जा सकता है।

क्रम संख्या	विधि	साधन	समय
1.	सहयोगियों से निचार–विमर्श करके।	पूछताछ प्रश्न	1 दिन
2.	नियमों की सूची तैयार करेगा।	प्रधानाचार्य से सम्पर्क करेगा।	1 दिन
3.	खेल की आवश्यकता व महत्ता की जानकारी देगा।	खेल अधिकारी से सम्पर्क करेगा।	1 सप्ताह
4.	सांस्क्रतिक कार्यक्रमों का महत्व बतायेगा।	साथी शिक्षक व छात्रों से पूछताछ।	2 दिन

परिणाम–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्रों में विद्यालयों के नियमों के प्रति रूचि उत्पन्न हुई है, अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित साधनों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के द्वारा दी जाने वाली विद्यालयों के नियमों का पालन करने के लिए प्रभाव स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती भारती शर्मा
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **समस्या :–** छात्रों की कक्षा कालांश में अनुपस्थिति

2. **समस्या का सीमांकन :–** राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झोटवाडा, जयपुर के कक्षा 7 के विद्यार्थियों की कला कालांश मे अनुपस्थिति

3. **संभावित कारण**

संभावित कारण	साक्ष्य
1. कला कक्ष का अभाव	1. परीक्षण द्वारा
2. कला कक्ष में सामग्री की कमी	2. कला के अध्यापक से वार्ता
3. कला विषय में छात्रों की रूचि न होना	3. छात्रो से वार्ता
4. अनुभवी अध्यापकों का अभाव	4. शिक्षक अनुभव द्वारा
5. अध्यापक द्वारा प्रयोग करने पर बल नहीं दिया जाना	5. शिक्षकानुभव द्वारा

क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. छात्रों के लिए कला कक्ष की सुनियोजित ढंग से व्यवस्था करने पर छात्रों की अनुपस्थिति में कमी आ जाएगी।
2. कला कक्ष में छात्रों हेतु उपर्युक्त सामग्री की व्यवस्था हो जाने पर छात्रों की उपस्थिति अधिक हो जाएगी।
3. अध्यापक द्वारा छात्रों को कक्षा शिक्षण के विषय में अधिकाधिक जानकारी देने पर छात्रों कला विषय के प्रति रूचि जागृत हो सकेगी।
4. अध्यापको को प्रशिक्षण देने पर छात्रो की अनुपस्थिति में कमी आ जायेगी।
5. छात्रो द्वारा उपस्थित न होने अध्यापक द्वारा उन्हे दण्ड देने पर अनुपस्थिति में कमी आ जायेगी।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम परिकल्पना कि 'कला कक्ष' में छात्रों हेतु उपर्युक्त सामग्री की व्यवस्था हो जाने पर छात्रों की अनुपस्थिति में कमी आ जाएगी। का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1. कला कक्ष में जिन – जिन वस्तुओं उपकरणों या सामग्री का अभाव है सूची तैयार करना।(उपलब्ध कराऐं)	सहयोगियों कला–कक्ष के अध्यापक सें वार्ता करके, निरीक्षण करके	हैंडमेड शीट, रिबन, ग्लीटर	7 दिन
2. जिस कम्पनी की सामग्री की व्यवस्था करनी है उसकी सूची तैयार करना (महत्व बतायेंगे)	सहयोगियों कला–कक्ष के अध्यापक सें वार्ता करके, निरीक्षण करके		3 दिन
3. विद्यालय में सभी उपयोगी सामग्री की व्यवस्था हो जाने छात्रो नई–नई वस्तुएँ अध्यापक द्वारा सिखाया जाना	कला कक्ष में सभी विद्यार्थियों को सिखया जाना		5 दिन
4. अध्यापक द्वारा छात्रों को नई–नई वस्तुएं बनाने पर बल देने पर छात्रों द्वारा प्रयत्न व प्रयास किया जाना	अध्यापक द्वारा छात्रों को प्रयास करने के प्रेरित करना		3 दिन

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्रों की अनुपस्थिति में कमी आई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानो के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर छात्रों की अनुपस्थिति को दूर करने के लिए प्रभावी स्वीकार किया जा सकता है।यदि प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से सकारात्मक परिणाम नहीं मिलते तो दूसरी, तीसरी इसी प्रकार आगामी परिकल्पनाओं का परीक्षण दिया जा सकता है।

श्रीमती मीनाक्षी शर्मा
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **योजना का शीर्षक :–**माध्यमिक स्तर के छात्रों की अंग्रेजी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों की समस्या।

2. **अनुसंधानकर्त्ता :–**शोधकर्त्ता एवं सभी अंग्रेजी विषय पढ़ाने वाले वरिष्ठ अध्यापक एक टीम के रूप में।

3. **योजना की पृष्ठभूमि :–**सामान्यतः यह देखा गया है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों को अंग्रेजी सम्बन्धी वर्तनी में कठिनाई होती है। अतः वह अध्यापक से भी कम सम्पर्क में रहता है।

4. **योजना का उद्देश्य :–**
   (1) छात्रों को अंग्रेजी विषय में समस्त लिखित कार्यों से विदित कराया जाये।
   (2) उनके कार्य का निरीक्षण करना।
   (3) समय–समय पर कक्षा में पुस्तक से वाचन करवाया जाये।

4. **विद्यालय के लिए योजना का उपयोग :–**बच्चों में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें लिखने के लिए अभ्यास कार्य दिया जाये तथा उन्हें अंग्रेजी विषय के महत्व को बताया जाये।

5. **समस्या का क्षेत्र :–**''छात्रों में अंग्रेजी विषय की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ'' से अभिप्राय है। छात्रों द्वारा अंग्रेजी विषय को कठिन समझना, स्पेलिंग याद नहीं करना तथा पाठ का वाचन नहीं करना तथा गृह कार्य ना करना।

7. **समस्या के लिए साक्षियाँ :–**
   (1) छात्र कक्षा में अंतःक्रिया नहीं करते हैं।
   (2) छात्रों की समस्या अभिभावकों के सामने नहीं आ पाती है।
   (3) छात्र व शिक्षक के मध्य सुचारू शिक्षण व्यवस्था न होना।
   (4) छात्र द्वारा कक्षा की किसी भी गतिविधि में भाग न लेना।

8. समस्या सम्बन्धी कारणों का विश्लेषण :–

(1) छात्रों में रूचि ना होना।
(2) पारिवारिक स्थिति अर्थात शिक्षित ना होने का भी प्रभाव पड़ता है।
(3) अध्यापकों का छात्रों के प्रति व्यवहार अच्छा या सहयोगी ना होना।
(4) छात्र का कम बोलना।

क्रियात्मक परिकल्पनाएँ :–

प्रथम–छात्रों के मध्य वर्तनी सम्बन्धी स्पेलिंग्स का आदान–प्रदान अर्थात् अन्ताक्षरी आदि करवायी जाए।

द्वितीय –छात्रों व शिक्षकों के मध्य क्रियाएँ करवायी जाए ताकि छात्रों की स्पेलिंग्स को शिक्षक गलत होने पर सही कर सके।

तृतीय –विद्यालय द्वारा छात्रों की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्रयास किया जाए।

क्रियात्मक परिकल्पना संख्या –2

क्रियाएँ जो आरम्भ करनी हैं	विधि	अपेक्षित साधन
1. छात्रों की वाचन क्रिया का निरीक्षण किया जाए व उसका आंकलन किया जाए।	विषय से सम्बन्धित अन्य शिक्षकों से परामर्श करेगा।	निरीक्षण कार्य।
2. छात्रों की वाचन सम्बन्धी त्रुटियों का पूर्व सप्ताह विवरण रखना।	सत्र सप्ताह का कार्यक्रम तैयार करना।	समय सारणी का नियोजन करना।
3. विद्यालय के बाहर छात्रों की भाषा सम्बन्धी जानकारी लेना।	अन्य शिक्षकों से परामर्श लेना।	शिक्षक निरीक्षण द्वारा छात्रों का भाषा सम्बन्धी विवरण रखेंगे।
4. शिक्षकों द्वारा छात्रों के वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों में अभिभावकों का सहयोग लिया जाए।	समस्या सम्बन्धी विवरण को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना।	वर्तनी अशुद्धियों करने के कारणों की तालिका द्वारा।

मूल्यांकन :–

प्रस्तुत क्रियात्मक परिकल्पनाओं की सत्यता का मूल्यांकन उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर किया जायेगा। अनुसन्धानकर्त्ता मूल्यांकन विधि को अधिक से अधिक वस्तुनिष्ठ बनाने का

प्रयत्न करेगा। वह वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारणों का चार्ट बनाएगा तथा अपने निरीक्षण अनुभवों तथा छात्रों की प्रतिक्रियाओं को प्रस्तुत करेगा।

अनुसन्धानकर्त्ता की टिप्पणी :–

क्रियात्मक कल्पनाओं की सार्थकता की पुष्टि के बाद शिक्षक अपनी युक्तियों में सुधार लाएगा तथा वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के कारणों को कम करेगा। योजना के क्रियान्वयन के समय जो विशेष परिस्थितियाँ उपस्थित होंगी, उनका विवरण दिया जाएगा।

श्रीमती सुनीता शर्मा
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या

अ. समस्या :–छात्रों द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों का उपयोग न करने की प्रवृति।

ब. समस्या का सीमांकन :–कक्षा 6 के कम्प्यूटर उपकरणों का प्रयोगिक रूप से उपयोग न करने की प्रवृति का उपचारात्मक अध्ययन।

2. संभावित कारण :–

	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक कम्प्यूटर उपकरणों के उपयोग पर बल नहीं देते।	अवलोकन, निरीक्षण
2.	विद्यालय में कम्प्यूटर उपकरणों का अभाव होना।	कम्प्यूटर कक्ष के अवलोकन द्वारा
3.	शिक्षकों द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों का शिक्षण के समय प्रस्तुत न करना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता

3. क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. शिक्षकों द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों के प्रयोग पर बल देने से उनमें कम्प्यूटर का प्रयोगिक उपयोग करने की रूचि उत्पन्न होगी।
2. विद्यालय में कम्प्यूटरों की उचित व्यवस्था करने से छात्रों में कम्प्यूटर का उपेयाग न करने की प्रवृति कम हो जायेगी।
3. शिक्षकों द्वारा कम्प्यूटर शिक्षण के समय कम्प्यूटर उपकरणों का प्रयोग कर छात्रों में कम्प्यूटर उपकरणों का प्रयोग न करने की प्रवृति में कमी हो जायेगी।

4. क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि "शिक्षकों द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों के प्रयोग पर बल देने से छात्रों में कम्प्यूटर का प्रयोगिक उपयोग करने की रूचि उत्पन्न हो जायेगी" का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है –

	क्रियाएँ	विधि	समग्री	अवधि
1.	शिक्षक छात्रों द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों का प्रयोग करवायेगा।	छात्रों को निर्देश देकर व	–	2 दिन

		निरीक्षण करके		
2.	शिक्षण कराते समय कम्प्यूटर उपकरणों का प्रयोग करेगा।	अवलोकन निरीक्षण	—	3—4 दिन
3.	आवश्यक कम्प्यूटर उपकरणों की सूची तैयार करेगा।	सहयोगियों से विचार — विमर्श करके	—	1 सप्ताह
4.	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों को क्रियान्वित करना।	—	—	3 सप्ताह

परिणाम :—

परिकल्पना में वर्णित सुझावों सेकम्प्यूटर उपकरणों का उपयोग नहीं करने की प्रवृति में कमी आई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :—

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा कम्प्यूटर उपकरणों का उपेयाग न करने की प्रवृति में कमी आई है। अतः इन उपायों को प्रभावी रूप से स्वीकार किया गया है।

- ❖ यदि प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से सकारात्मक परिणाम नही मिलते तो दूसरी, तीसरी इसी प्रकार आगामी परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सकता है।

श्रीमती सुनीता कुमारी शर्मा
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसन्धान

(1) क्रियात्मक अनुसन्धान की समस्या :–

संगीत कक्ष में विद्यार्थियों द्वारा वाद्य यंत्रों का प्रयोग न करने के कारण स्वय, लय, ताल रहित अभ्याय के प्रशिक्षण को रोकने का अध्ययन।

(2) समस्या का सीमांकन :–

राजकीय सीनियर सैकण्डरी कन्या विद्यालय, मटका चौराहा, श्रीगंगानगर के कक्षा 11वीं के 25 छात्राओं द्वारा ऐच्छिक संगीत विषय में वाद्य यंत्रों का चतुर्थ कालांश में प्रयोग न किया जाना।

(3) सम्भावित कारण :–

	कारण	साक्ष्य
(1)	शिक्षक वाद्य यंत्रों के साथ गायन करने के अभ्यास पर बल नहीं देते।	शिक्षकानुभव।
(2)	विद्यालय में वाद्य यंत्रों का अभाव जिससे छात्राओं को गायन अभ्यास की समस्या आती है।	शिक्षकानुभव है कि स्कूल में पर्याप्त रूप से वाद्य यंत्रों का अभाव।
(3)	छात्रों के पास अभ्यास के लिए घर पर सस्वर गायन अभ्यास के लिए सहायक वाद्य यंत्रों का अभाव।	शिक्षक द्वारा छात्रों से पूछताछ कर पुष्टि की जायेगी।
(4)	शिक्षकों द्वारा वाद्य यंत्र जैसे हारमोनियम, तानपुरा, तबला के साथ गायन अभ्यास न करवाना।	स्वराभ्यास पर आधारित।

(4) क्रियात्मक परिकल्पना :–

(1) विद्यालय में वाद्य यंत्रों की उचित व्यवस्था करने से स्वर ताल–लय सहित अभ्यास के प्रशिक्षण को बढ़ाया जा सकता है।

(2) छात्रों को घर पर अभ्यास के लिए वाद्य यंत्र उपलब्ध करवाकर स्वर लय ताल का अभ्यास करने पर बल दिया जा सकता है।

(3) शिक्षकों द्वारा वाद्य यंत्रों के साथ गायन करने के अभ्यास पर बल देने से स्वर ताल रहित अभ्यास के प्रशिक्षण को रोका जा सकता है।

(5) क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना के अन्तर्गत विद्यालय में संगीत शिक्षण के लिए वाद्य यंत्रों की व्यवस्था करवा कर छात्रों को वाद्य यंत्र के साथ अभ्यास करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। सुमधुर संगीत प्रशिक्षण के लिए तैयार किए गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है –

	क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
(1)	किन–किन छात्रों के पास घर पर गायन सहायक वाद्य यंत्र हैं, उसका पता लगाकर, सूची बनायेंगे।	अध्यापक छात्रों से पूछताछ कर सूची तैयार करेंगे।	प्रश्नात्मक रूप से पूछकर।	2 दिन
(2)	जिन छात्रों के पास सहायक वाद्य यंत्र नहीं है। उन छात्रों को वाद्य खरीदने के लिए कहेंगे।	सहायक वाद्य यंत्रों का नाम बताकर उचित मार्ग दर्शन करेंगे कि वाद्य यंत्र प्रशिक्षण में सहायक हैं।	अभिभावक को सूचित करके कि बिना वाद्य यंत्र की सहायता से गायन संभव नहीं है इसलिए वाद्य यंत्र की व्यवस्था करवाये।	1 सप्ताह
(3)	संगीत कक्ष में छात्रों को वाद्य यंत्रों के साथ अभ्यास करने का निर्देश देकर, कक्षा में हारमोनियम, तानपुरा, तबलों का प्रयोग करवाकर प्रशिक्षण करवायेंगे।	छात्रों को शिक्षक द्वारा प्रशिक्षण के दौरान ताल– स्वर स्थान पूछकर ताल–स्वर की पहचान बताकर प्रशिक्षण देना।	छात्रों का गायनाभ्यास का अवलोकन करना।	15 दिन
(4)	संगीत शिक्षक के द्वारा छात्रों से कक्षा में रागाभ्यास सुनकर पुष्टि करना।	शिक्षक द्वारा छात्रों को गायन–वादन शैली में युगलबंदी करवाकर।	गायन वादन प्रतियोगिता का आयोजन कर श्रेष्ठ छात्रों को पुरस्कृत करना।	2 दिन

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्राओं की रूचि वाद्य यंत्रों के साथ गायनाभ्यास करने में दिखाई देने लगी है। छात्राओं को वाद्य–यंत्रों के साथ प्रशिक्षण में आनन्द आने लगा है। साथ ही साथ लय, स्वर–स्थान, ताल का ज्ञान भी बढ़ा, जिससे छात्राओं में संगीत की गुणात्मक शैली का विकास हृआ है। अतः इन परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

निष्कर्ष :–

इस क्रियात्मक अनुसन्धान द्वारा वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्प के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्राओं में वाद्य यंत्रों के साथ प्रशिक्षण प्राप्त करने तथा अभ्यास करने के लिए स्वयं वाद्य यंत्रों का प्रयोग करने में वृद्धि हुई है क्योंकि छात्रों की संगीत कक्ष में वाद्य यंत्रों के प्रयोग से सुमधुर सरस, कर्णप्रिय संगीत शैली का अनुभव हुआ है जिससे छात्राओं ने स्वयं वाद्य यंत्रों के साथ अभ्यास पर बल दिया है। अतः इस क्रियात्मक अनुसन्धान की सार्थकता को देखते हुए यह स्वीकार्य अनुसन्धान है।

श्रीमती राजू पंसारी
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **समस्या का चुनाव**– इतिहास के कालांश में छात्रों का विद्यालय से भाग जाना।

2. **समस्या का सीमांकन –** विवेकानन्द सी.सै. स्कूल, जयपुर के कक्षा 11 के छात्रों का इतिहास के कालांश में विद्यालय से भाग जाने के कारणों का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।

3. **सम्भावित कारण –**

क्र. सं.	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक बच्चों को पढ़ाने के तरीके का रूचिकर न होना	शिक्षक का अवलोकन
2.	शिक्षक की इतिहास को पढ़ानें में उदासीनता	छात्रों व शिक्षक के मध्य शिक्षण व्यवस्था से
3.	शिक्षक का रोचक तथा बीच–बीच में मनोरंजन न करना	शिक्षक का अवलोकन
4.	विद्यालय से भाग जाने पर छात्रों को दण्डित न करना	अवलोकन तथा अध्यापकों से वार्ता।

4. **क्रियात्मक परिकल्पाना –**
    1. शिक्षक द्वारा विद्यालय में इतिहास को रोचक बनाने व नई – नई विधियों का प्रयोग करनें के लिए प्रेरित करके छात्रों को भागने से रोका जा सकता है।
    2. विद्यालय में समय–समय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता करके छात्रों को इतिहास कालांश में भागने से रोका जा सकता है।
    3. शिक्षक का बीच–बीच में प्रश्न पूछ कर समझा कर उत्तर देकर छात्रों को भागने से रोका जा सकता है।

5. **क्रियात्मक अभिकल्प**– प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना में छात्रों का इतिहास के कालांश में भागने की समस्या की जांच करने पर छात्रों केभागने की प्रवृति कम जो जायेगी छात्रों का

परीक्षण करने के लिए तैयार किये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्र. सं.	क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1.	शिक्षक विद्यालय में वाद–विवाद प्रतियोगिता का विवरण तैयार करेगा।	शिक्षक अपने अन्य सहयोगी शिक्षकों से परामर्श करेगा।	निरीक्षण कार्य	4 सप्ताह
2.	छात्रों की समस्त गतिविधियों का पूर्व सप्ताह विवरण करेगा।	हर सप्ताह कार्य को तैयार करना।	समय सारणी का आयोजन	1 सप्ताह
3.	शिक्षकों द्वारा छात्रों के भागने के प्रवृति को रोकने के लिए अभिभावकों का सहयोग लिया जाये।	समस्या सम्बन्धी विवरण को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना।	इतिहास कालांश में भागने की प्रवृति के अनुभवों का लिखित अंत	1 माह
4.	परिकल्पना में अभिकथित सुझावों को क्रियान्वित करना।	शिक्षक अपने अन्य सहयोगी शिक्षकों से विचार विमर्श करें	समान्य विवरण	1 माह

6. **परिणाम –** परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्रों में वाद–विवाद प्रतियोगिता संतोषजनक न करने की प्रवृति में कमी आयी है अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

7- **निष्कर्ष –** क्रियात्मक परिकल्पना की पृष्टि के लिए शिक्षक प्रदत्तों को संकलन करेगा। इन सब में अनुमान सूची परीक्षण विधि तथा परीक्षा विधि का प्रयोग।

श्रीमती तृप्ति सैनी
व्याख्याता –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या

(अ) समस्या :– छात्रों द्वारा वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ करना।

(ब) समस्या का सीमांकन :– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के जयपुर कक्षा 7 के छात्रों द्वारा अग्रेंजी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ करना।

1. संभावित कारण :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	अध्यापक के द्वारा अभ्यास पुस्तिका में अशुद्धियों को दूर न करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं की जांच।
2.	छात्रों द्वारा लिखित कार्यों में लापरवाही करना।	छात्रों की लिखित पुस्तिकाओं निरिक्षण करना।
3.	छात्रो द्वारा वर्तनी की त्रुटियाँ करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं का अवलोकन।
4.	छात्रों की शब्दों की पहचान शक्ति निम्न स्तर की होना।	शब्द पहचान शक्ति सम्बन्धी परीक्षा लेना
5.	अध्यापकों के द्वारा वर्तनी की अशुद्धियों के लिए छात्रों को दण्डित न करना।	अध्यापक के अध्ययन अनुभव पर आधारित ।

2. क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. छात्रों की अभ्यासप पुस्तिका में अध्यापक द्वारा अशुद्धियों को ठीक करने व सही लिखने का निर्देश देने पर छात्रों मे वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धिया कम हो जायेगी।
2. अग्रेंजी दिये जाने वाले कार्य को ध्यानपूर्वक जांचकर और निर्देश देने पर छात्रों में वर्तनी सम्बन्धित अशुद्धियाँ कम हो जायेगी।
3. अध्यापक के द्वारा छात्रों में ज्यादातर होने वाली त्रुटियों के बारे मे जानकारी देने पर वर्तनी की त्रुटिया कम हो जायेगी।
4. जिन जिन छात्रों की शब्द पहचान शक्ति कम है उनका शब्द पहचान परीक्षण एवं अन्य त्रुटि सम्बन्धी परीक्षण लेने पर उनमे वर्तनी सम्बन्धी त्रुटिया कम हो जायेगी।

5. छात्रों के द्वारा त्रुटि करने पर अध्यापक द्वारा दण्ड स्वरूप उनके अंको में कटौती करन या लाल पेन से गलतियों को उजागर करने पर उनमें वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ कम हो जायेगी।

3. क्रियात्मक अभिकल्पना :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि "छात्रों की अभ्यास पुस्तिका मे अध्यापक के द्वारा अशुद्धियों को ठीक करने व सही लिखने का निर्देश देने पर छात्रों मे वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ कम हो जायेगी" का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है –

क्र.स.	क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1.	अंग्रेजी होने वाली त्रुटियों की सुचि बनाना।	निरिक्षण विधि	पाठ्यपुस्तक	4 दिन
2.	अशुद्ध शब्दो को ठीक करना व निर्देश देना।	ध्यानपूर्वक जांच	पाठ्यपुस्तक	1 सप्ताह
3.	शुद्ध और अशुद्ध शब्दों में अंतर बताना।	तुलानात्म्क विधि	पाठ्यपुस्तक श्यामपट्ट सामग्री	1 सप्ताह
4.	शुद्ध शब्दों वाला लिखित परीक्षण लेना।	परीक्षण विधि	टेस्ट पेपर	1 सप्ताह
5.	अशुद्ध शब्द लिखने पर अंकों में कटौती व शुद्ध शब्द लिखने पर प्रोत्साहन देना।	अभिप्रेरित करना	इनाम अभिप्रेरित शब्द आदि	2 सप्ताह

5. परिणाम :–

परिकल्पनाओं मे वर्णित सूझावों से वर्तनी की अशुद्धियों मे कमी आयी है अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागु करने पर छात्रों द्वारा कि जाने वाली अग्रेंजी की अशुद्धियों मे पर्याप्त कमी आयी है अतः इन उपायों को वर्तनी की अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

****

क्रियात्मक अनुसन्धान

सत्र – 2016–17

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनुसन्धान कार्य की आवश्यकता है। अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण एवं सविचार प्रक्रिया है इसका उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाना और परिमार्जित कर उपयोगी बनाना है। क्रियात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यवहारिक कार्यकर्त्ता वैज्ञानिक विधि से अपनी समस्याओं का अध्ययन अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन, सुधार और मूल्याकंन करते है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से शिक्षक अपने स्तर पर भी शैक्षणिक कार्य में आने वाली समस्याओं का समुचित समाधान कर सकते हैं जिससे विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। क्रियात्मक शोध के द्वारा शिक्षण कार्य के दौरान समस्या का चयन व समाधान की दिशा में कार्य किया जाता है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य यह है कि सभी क्रियात्मक शोध के प्रति जागरूक हो।

इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए सत्र 2016–17 में बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज की व्याख्याताओं द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान पर अपने–अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। व्याख्याताओं द्वारा शोधपत्र में प्राकल्प शीर्षक, अनुसन्धानकर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उर्त्ता, पृष्ठभूमि, प्रस्तावित अनुसन्धान के उद्देश्य, प्राकल्प का महत्त्व, समस्या का क्षेत्र, समस्या का विशिष्ट रूप, समस्या के तथ्यों का विश्लेषण, क्रियात्मक परिकल्पना, क्रियात्मक परिकल्पना की सार्थकता के लिए रूपरेखा, मूल्याकंन आदि का उल्लेख किया गया। शोधपत्र जो प्रस्तुत किये गये उनका विवरण इस प्रकार है :–

क्र0 सं0	शोधकर्त्री	क्रियात्मक अनुसंधान का शीर्षक
1	डॉ. शिप्रा गुप्ता	उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों में समायोजन की समस्या
2	श्रीमती मालती सक्सेना	छात्रों में रूचि का न होना
3	श्रीमती सुनीता कु0 शर्मा	हिन्दी के छात्रों द्वारा लेखन में मात्रा से सम्बन्धित अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्ययन
4	श्रीमती सरिता पारीक	छात्रों में अनुशासनहीनता की बढ़ती हुई प्रवृति में सुधार लाने के प्रति अध्ययन
5	श्रीमती सुनीता शर्मा	इतिहास विषय के छात्रों द्वारा विद्यालय में चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृति का अध्ययन

6	श्रीमती तृप्ति सैनी	छात्रों के द्वारा भूगोल विषय के प्रायोगिक उपकरणों के उपयोग की समस्या
7	श्रीमती आरती गुप्ता	कक्षा –11 के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की प्राणी विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष में प्रयोग करने में अरूचि की प्रवृति
8	श्रीमती भारती शर्मा	विद्यार्थियों को प्रयोग के दौरान उपकरणों का सन्तोषजनक पूर्वक उपयोग न कर पाना
9	श्रीमती मुकेश कुमारी	छात्र–छात्राओं द्वारा विद्यालय पुस्तकालय में अध्ययन करने में अरूचि की प्रवृति का अध्ययन करना
10	श्री मनीष सैनी	छात्र–छात्राओं द्वारा विद्यालयी सामुदायिक गतिविधियों में अरूचि दिखाना
11	श्रीमती मीनाक्षी शर्मा	सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण में छात्रों द्वारा अरूचि न लेना
12	श्रीमती नीलम कुमारी	छात्रों में अनुशासनहीनता की बढ़ती हुई प्रवृति में सुधार लाने की प्रवृति का अध्ययन करना
13	श्रीमती मोनिका भारद्वाज	छात्र–छात्राओं के द्वारा भूगोल के प्रायोगिक कार्यो में अरूचि दिखाना
14	श्रीमती पिंकी शर्मा	छात्रों के द्वारा त्रिकोणमितीय सूत्रों का उपयोग नहीं करना
15	श्रीमती नलिनी शर्मा	छात्रों का खेल के कालांश में विद्यालय से भाग जाना
16	श्रीमती पुष्पा कुमावत	अंग्रेजी के छात्रों द्वारा अंग्रेजी में सम्प्रेषण का संतोषजनक प्रयोग न करना
17	श्रीमती रंजना पारीक	भूगोल विषय में प्रश्न पूछने पर छात्रों का उत्तर न देना

डॉ. शिप्रा गुप्ता (रीडर)
विभागाध्यक्ष –शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान योजना

1. **योजना का शीर्षक**–"उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों में समायोजन की समस्या।"
2. **अनुसंधानकर्त्ता**– सभी विषयों के अध्याय।
3. **योजना की पृष्ठभूमि**– शिक्षक ने अपने शिक्षण कार्य में अनुभव किया कि छात्र कक्षा में अन्य छात्रों के साथ समायोजन नहीं कर पाता है।
4. **प्रस्तावित अनुसंधान के उद्देश्य**–
   i. छात्रों को आपस में समायोजन करने के लिए जागरूक करना।
   ii. छात्र को समायोजन करने के लिए प्रेरित करना।
   iii. छात्रों को समायोजन करने के स्तर को उन्नत करना।
   iv. छात्र को अन्य छात्रों के साथ समायोजन करने के महत्व को समझाना।
5. **विद्यालय के लिए योजना का उपयोग**– छात्रों में समायोजन की भावना का विकास होगा तथा उनमें आपसी सहयोग की भावना भी विकसित होगी।
6. **समस्या का क्षेत्र**– छात्रों में समायोजन की समस्या।
7. **समस्या का विशिष्ट रूप** – आकाशदीप सी.सै. स्कूल, जयपुर के कक्षा 7 के छात्रों में समायोजन ना कर पाने के कारणों का अध्ययन करना तथा उसमें सुधार लाना।
8. **समस्या के कारणों का विश्लेषण**– समस्या संबंधी कार्यों का विश्लेषण निम्न तालिका की सहायता से किया गया है–

कारण विश्लेषण तालिका की सहायता से क्रियात्मक–परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। इन्हीं कारणों को ध्यान में रखा जाता है। जो शिक्षण के नियंत्रण के अंतर्गत होते है।

समस्या संबंधी कारणों का विश्लेषण

क्र.सं.	कारण	साक्षियाँ	तथ्य तथा अनुमान	शोधकर्त्ता का नियंत्रण
1	छात्रों में रूचि ना होना	छात्र का कक्षा में अन्तःक्रिया ना करना।	अनुमान	नियंत्रण के अंतर्गत है।
2	परिवारिक वातावरण	छात्र–अभिभावक संगोष्ठी	तथ्य	अंतर्गत
3	अध्यापकों का व्यवहार	छात्र व शिक्षक के मध्य शिक्षण व्यवस्था करवाना	तथ्य	अंतर्गत है।

4	छात्र का अंर्तमुखी होना	छात्र द्वारा कक्षा में किसी भी गतिविधि में भाग ना लेना।	तथ्य	अंतर्गत

क्रियात्मक परिकल्पना–

प्रथम– छात्रों के मध्य समस्त गतिविधियाँ करवाई जाए तथा उनका भली प्रकार निरीक्षण किया जाए तो छात्रों में समायोजन ना होने के कारणों में सुधार किया जा सकता है।
द्वितीय–छात्रों के मध्य वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाए तो छात्रों में समायोजन की समस्या में सुधार किया जा सकता है।
तृतीय–छात्रों व शिक्षकों के मध्य क्रियाएँ करवाई जाए तो छात्रों में समायोजन ना करने की समस्या को दूर किया जा सकता है।
चतुर्थ– विद्यालय द्वारा छात्रों में समायोजन की समस्या का निरीक्षण किया जाए और समायोजन की समस्या को अध्यापकों द्वारा हल करने की कोशिश की जाए।

क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टि के हेतु प्रारूप – क्रियात्मक अनुसंधानो में प्रत्येक परिकल्पना को सार्थकता के लिये अलग–अलग रूपरेखा तैयार की जाती है।
यदि प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना इस समस्या के समाधान में सफल नहीं होती है, तब इसी प्रकार, द्वितीय परिकल्पना की सार्थकता हेतु रूपरेखा का अनुसरण किया जाएगा।

प्रथम क्रियात्मक – परिकल्पना की पुष्टि हेतु प्रयास

क्र.सं.	कार्य को आरंभ किया जाता है	विधि	अपेक्षित साधन	समय
1	छात्रों के क्रियाकलापों को निरीक्षण शिक्षक द्वारा किया जाए और उसका विवरण तैयार करना।	शिक्षक अपने अन्य सहयोगी शिक्षको से परामर्श करेगा।	निरीक्षण कार्य	4 दिन
2	छात्रों की समस्त गतिविधियों का पूर्व सप्ताह विवरण रखना।	सत्र सप्ताह का कार्यक्रम तैयार करना।	स्मय सारणी का नियोजन	1 सप्ताह
3	विद्यालय के बाहर छात्रों की गतिविधियों का निरीक्षण करना।	अन्य शिक्षकों से परामर्श करना।	शिक्षक निरीक्षण द्वारा छात्रों के व्यवहारों का विवरण रखेगें।	1 सप्ताह
4	शिक्षकों द्वारा छात्रों समायोजन करने केलिए अभिभावकों का सहयोग लिया जाए।	समस्या संबंधी विवरण को प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत करना।	स्मायोजन ना करने के लिए दुष्प्रभावों की तालिका द्वारा	दो माह

मूल्यांकन– प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टि हेतु रूपरेखा के अनुसरण करने से जो प्रदत्त उपलब्ध होंगें, उनका विश्लेषण किया जाएगा। समायोजन ना करने के दुष्प्रभावों का चार्ट बनाया जाएगा। शिक्षण द्वारा अपने निरीक्षण अनुभवों तथा छात्रों की प्रतिक्रियाएं भी प्रस्तुत की जाती है। इन प्रदत्तों के आधार पर शिक्षक समायोजन ना करने की समस्या से मुक्ति के लिए व छात्रों में सुधार के लिए निर्णय ले सकता है।

1.17 अनुसंधानकर्त्ता की टिप्पणी–

क्रियात्मक कल्पनाओं की सार्थकता की पुष्टि के बाद शिक्षक अपनी युक्तियों में सुधार ला सकता है। समायोजन ना करने के कारणों को कम कर सकता है। छात्रों के विषय में जागरूक कर सकता है।

श्रीमती मालती सक्सैना
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

समस्या : छात्रों में रूचि का न होना

समस्या संबंधी कारणों का विश्लेषण

क्रं0 सं0	कारण	साक्षियों	तथ्य तथा अनुमान	शोधकर्ता का नियंत्रण
1	छात्रों में रूचि का न होना	छात्रों का कक्षा में अन्तः क्रिया	अनुमान	नियंत्रण के अन्तर्गत है।
2	पारिवारिक वातावरण	छात्र अभिभावक संगोष्ठी	तथ्य	नियंत्रण के अन्तर्गत है।
3	अध्यापको का व्यवहार	छात्र व शिक्षक के मध्य शिक्षण व्यवस्था करवाना।	तथ्य	नियंत्रण के अन्तर्गत है।
4	छात्र का अर्न्तमुखी होना	छात्र द्वारा कक्षा में किसी गतिविधि में भाग लेना	तथ्य	नियंत्रण के अन्तर्गत है।

क्रियात्मक परिकल्पना –

प्रथम छात्रो के मध्य समस्त गतिविधियाँ करायी जायें तथा उनका भली प्रकार निरिक्षण किया जाये तो छात्रों में समायोजन ना होने के कारण सुधार किया जा सकता है।

द्वितिय छात्रो के मध्य वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजन करवाया जाए तो छात्रों में समायोजन की समस्या में सुधार किया जा सकता है।

तृतीय छात्रो व शिक्षको के मध्य क्रियाएँ करवायी जाए तो छात्रों में समायोजन ना करने की समस्या को दूर किया जा सकता है।

चतुर्थ विधायों द्वारा छात्रो में समायोजन की समस्या का निरिक्षण किया जाए और समायोजन की समस्या को अध्यापको द्वारा हल करने की कौशिश की जाये।

क्रियात्मक परिकल्पना की पुष्टि के हेतू प्रारूप –

क्रियात्मक अनुसंधानो में प्रत्येक परिकल्पना को सार्थकता के लिए अलग–अलग रूपरेखा तैयार की जाती है। यदि प्रथम परिकल्पना इस समय के समाधान में सफल नही होती है, तब इसी प्रकार द्वितिय परिकल्पना की सार्थकता हेतु रूपरेखा का अनुसरण किया जायेगा।

क्रियाएँ जो आरम्भ करनी है।	ध्वनि	अपेक्षित साधन
1. वरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों की रूचियों का पता लगााना तथा उनकी प्रिय अध्ययन सूची बनाना।	प्रश्नावली देकर छात्रो की रूचियो का पता लगाना।	रूचि – विषयक प्रश्नावली
2. उन पुस्तको तथा पत्र–पत्रिकाओं की व्यवस्था करना जिन्हें छात्र पसन्द करते है।	पुस्तकालय में नई पुस्तके तथा पत्र–पत्रिकाएँ मँगवाकर। समय तीन सप्ताह	पुस्तके तथा पत्र पत्रिकाएँ
3. पुस्तकालय तथा वाचनालय में नवीन प्रकार की पुस्तको से छात्रों का परिचय कराना।	अध्यापक स्वयं वह कार्य करेंगे। समय एक सप्ताह	पुस्तके तथा पत्र पत्रिकाएँ
4. प्रत्येक अध्यापक छात्रों के साथ पुस्तकालय तथा वाचनालय का प्रयोग किया करेगा।	अध्यापक व छात्र प्रतिदिन अपने अवकाश के कालांशो में पुस्तकालय तथा वाचनालय का साथ –साथ प्रयोग करेंगे। समय एक सप्ताह	पुस्तके तथा पत्र पत्रिकाएँ

इन दोनो क्रियाओं परिकल्पनाओं के क्रियान्वयन में लगभग आठ माह लगेंगे। इनके अन्तर्गत जिन क्रियाओं का उल्लेख किया गया है, वे प्राय प्रथमता के अनुसार अंकित है।

मूल्यांकन –प्रस्तुत पाठ योजना में क्रियात्मक परिकल्पनाओं का मूल्यांकन प्रश्नावली, सम्मतिपत्रक तथा प्रेक्षण द्वारा किया जायेगा। प्रश्नावली तथा सम्मति–पत्रक की रचना अध्यापक स्वयं करेंगे।

अनुसंधानकर्ता की टिप्पणी –पुस्तकालय तथा वाचनालय का प्रयोग करतें समय छात्रो की क्रियाओं का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

श्रीमती सुनीता कुमारी शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

तात्कालिक समस्याओं के समाधान हेतु किया गया शोध :–

क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या :– हिन्दी के छात्रों द्वारा लेखन में मात्रा से सम्बन्धित अशुद्धियों को दूर करने के लिए अध्ययन।

समस्या का सीमाकंन :–

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गांधीनगर जयपुर के कक्षा 8 के छात्रों द्वारा हिन्दी के लेखन में मात्राओं का प्रयोग सही प्रकार न करना।

संभावित कारण :–

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक वर्णों, स्वर एंव व्यंजनों के सही प्रकार ज्ञान पर बल नहीं देते।	छात्रों से प्रश्न पूछकर व परीक्षण द्वारा।
2.	शिक्षकों द्वारा छात्रों की उत्तरपुस्तिकाएँ एंव लेखन कार्य सही प्रकार न जाँचना।	छात्रों के लिखित कार्यों का सही प्रकार निरिक्षण करके।
3.	शिक्षकों द्वारा अध्ययन के समय छात्रों की मात्रात्मक वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों पर ध्यान न देना।	छात्रों से पूछताछ तथा प्राथमिक कक्षाओं के लिखित कार्य का निरीक्षण करके।

क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. शिक्षकों द्वारा छात्रों को वर्णों, स्वर एंव व्यंजनों का सही प्रकार से ज्ञान देकर छात्रों की लेखन सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता हैं।
2. शिक्षकों द्वारा छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं एंव लेखन कार्य सही प्रकार जाँच कर छात्रों की वर्ण सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता हैं।
3. शिक्षकों के द्वारा छात्रों के अध्ययन के समय छात्रों की मात्रात्मक वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों पर सही प्रकार ध्यान देकर छात्रों की मात्रात्मक अशुद्धियों को दूर किया जा सकता है।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की'शिक्षकों द्वारा छात्रों को वर्णों, स्वर एंव व्यंजनों का सही प्रकार ज्ञान देकर छात्रों की लेखन सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर किया जा सकता हैं', का

परीक्षण करने के लिए तैयार किए गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढ़ंग से लिखा जा सकता है :–

क्र.सं.	क्रियाएँ	विधि	साधन	समय
1.	लिखित कार्यों का समुचित ढ़ंग से निरिक्षण कर लिखित कार्यों की सूची तैयार करना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें।	एक सप्ताह
2.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु लिखित कार्यों का चयन करना।	शिक्षण–अधिगम क्रिया–कलापों की विवेचना करके।	समय–सारणी	एक सप्ताह
3.	चयनित लिखित कार्यों के क्रम को निर्धारित करना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	———	एक सप्ताह
4.	जिन –जिन छात्रों द्वारा मात्रा की त्रुटियाँ अधिक की जाती हैं उनकी सूची बनाकर विश्लेषण करना।	सूची, सारणी एंव विश्लेषण द्वारा।	सूची–एवं सारणी	तीन सप्ताह
5.	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों को क्रियान्वित करना।	———	———	तीन सप्ताह

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों सेलेखन की मात्रात्मक अशुद्धियों में कमी आई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता हैं।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा की जाने वाली हिन्दी के लेखन में मात्रात्मक अशुद्धियों को दूर करने के लिए प्रभावी स्वीकार किया जा सकता हैं।

श्रीमती सरिता पारीक
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या :–

(i) समस्या – छात्रों में अनुशासनहीनता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति में सुधार लाने के अध्ययन करना।

(ii) समस्या का सीमांकन – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खोराबीसल के कक्षा के छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रकृति का बढ़ना।

2. सभांवित कारण :–

क्र. सं.	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक छात्रों के द्वारा अनुशासन भंग करने पर ध्यान नहीं देता।	कक्षा का अवलोकन करने पर।
2.	छात्रों को उचित मार्गदर्शन ना मिलना।	शिक्षक का अनुभव।
3.	पाठ्यसहगामी क्रियाओं का अभाव।	शिक्षक का अनुभव।
4.	विद्यालय का समय अधिक होना।	अवलोकन करने पर।

3. क्रियात्मक परिकल्पना :–

(i) शिक्षक छात्रों द्वारा अनुशासन भंग करने पर ध्यान देकर छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृति में सुधार किया जा सकता हैं।

(ii) छात्रों को उचित मार्गदर्शन देने पर अनुशासनहीनता की प्रवृति को कम किया जा सकता हैं।

(iii) पाठ्यसहगामी क्रियाओं की व्यवस्था कर छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति को कम किया जा सकता हैं।

(iv) विद्यालय का समय कम करके छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति को कम किया जा सकता हैं।

4. क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि ''शिक्षक छात्रों'' द्वारा अनुशासन भंग करने पर ध्यान देकर छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति में सुधार किया जा सकता हैं। का परीक्षण करने के लिये तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता हैं –

क्र.सं.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	समय
1.	अनुशासन भंग करने वाले छात्रों की सूची तैयार करेगा।	सहयोगियों से विचार–विमर्श द्वारा।	सूची	2 दिन
2.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु अनुशासन भंग करने वाले छात्रों को दण्ड दिया जायेगा।	सहयोगियों से विचार–विमर्श से।	सूची	1 सप्ताह
3.	अनुशासन का पालन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करेगा।	सहयोंगियों से विचार–विमर्श से।	सूची	1 सप्ताह
4.	शिक्षक अभिभावकों को विद्यार्थियों को अनुशासन का महत्त्व बताने के लिये तथा उन्हें अनुशासन हेतु प्रेरित करने के लिये कहेगा।	बैठकों का आयोजन।	व्यवस्था करना।	1 सप्ताह

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति में कमी आई हैं। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता हैं।

सामान्य निष्कर्ष :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर छात्रों द्वारा की जाने वाली प्रभावी स्वीकार किया जा सकता हैं। तथा मनोवैज्ञानिक तरीके, प्रेम द्वारा इन कारणों में सुधार लाया जा सकता हैं।

श्रीमती सुनिता शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **समस्या का चुनाव :–**इतिहास विषय के छात्रों द्वारा विद्यालय में चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृति का अध्ययन।

2. **समस्या का सीमांकन :–**टैगोर सी.सै. स्कूल जयपुर के कक्षा 11 के छात्रों का विद्यालय में चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने के कारणों का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।

3. **संभावित कारण :–**

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक चार्ट वंशावली के प्रयोग के लिए बल नहीं देते है।	शिक्षक का अनुभव
2.	विद्यालय में चार्ट का वंशावली का अभाव है।	स्कूल में इतिहास कक्ष की व्यवस्था होना।
3.	शिक्षकों द्वारा ऐतिहासिक उपकरणों का शिक्षण में उपलब्ध न होना।	अध्ययन अनुभव पर आधारित
4.	विद्यालय में चार्ट वंशावली की उपयोगिता का न समझाना	शिक्षक का अवलोकन

क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. छात्रों का चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने पर अध्यापक द्वारा प्रयोग के लिए बल देकर संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृति को रोका जा सकता है।
2. विद्यालय में छात्रों को समय समय पर चार्ट वंशावली उपलब्ध करके उन्हे चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग करने से रोका जा सकता है।
3. शिक्षक द्वारा छात्रों को चार्ट वंशावली की महत्व एवं उपयोगिता को समझाकर चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने से रोका जा सकता है।
4. विद्यालय में शिक्षकों द्वारा ऐतिहासिक उपकरणों को शिक्षण में उपलब्ध करके छात्रों को चार्ट वंशावली के संतोषजन उपयोग न करने से रोका जा सकता है।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना में छात्रों को चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने की समस्या की जांच करने पर संतोषजनक उपयोग न करने वाली कठिनाइयाँ कम हो जायेगी। छात्रों का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प की निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्र. स.	क्रियायें	विधि	सामग्री	समय
1.	इतिहास शिक्षक विद्यालय में उपलब्ध चार्ट वंशावली की जानकारी लेगा।	इतिहास कक्ष में सूची बनायेगा।	इतिहास कक्ष अधिकारी से सम्पर्क स्थापित करेगा।	4 सप्ताह
2.	आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था करेगा	कक्षा 11 के पाठ्यक्रम के उपरणों की सूची तैयार करेगा।	प्रधानाचार्य की सहायता से आवश्यक उपकरणों की अवस्था करेगा।	1 सप्ताह
3.	पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित उपकरणों का प्रयोग करना।	पाठ योजना से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन करना।	इतिहास कक्ष से प्राप्त करना	1 दिन
4.	शिक्षकों द्वारा छात्रों का चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृति को रोकने के लिए अभिभावकों का सहयोग लिया जाये।	समस्या सम्बन्धी विवरण को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना।	चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग करने की प्रवृति के दुष्प्रभावों की तालिका द्वारा ।	1 माह

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्रों के चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृति में कमी आई है अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सौपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग न करने की प्रवृति में कमी आई है। अतः इन उपायों की चार्ट वंशावली का संतोषजनक उपयोग करने की प्रवृति की दुर करने के लिए प्रभावीरूप से स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती तृप्ति सैनी
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

(1) **समस्या :–** छात्रों के द्वारा भूगोल विषय के प्रायोगिक उपकरणों के उपयोग की समस्या।

(2) **समस्या का सीमांकन :–**कक्षा 11 के छात्रों द्वारा भूगोल के प्रायोगिक में ली जाने वाली उपकरणाों के प्रयोग में लेने की समस्या।

2. संभावित कारण :–

क्र.स.	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारार लिखित कार्य में लापरवाही	अभ्यास पुस्तिकाओं अवलोकन
2.	छात्रों में प्रायोगिक उपकारण पहचान की योग्यता की कमी	अवलोकन, परीक्षण, साक्षात्कार
3.	उपकरण उपलब्धि की समस्या	उपकरण उपलब्ध कराना।
4.	अध्यापक द्वारा उपकरणों के बारे में सही तरीके से न बताने की समस्या	अध्यापक द्वारा सही तरीके से पढ़ाया जाना।
5.	त्रुटिया करने पर छात्रों को दण्डित न करना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता

3. क्रियात्मक परिकल्पना :–

(1) छात्रों का प्रायोगिक कार्य विधिवत ढंग से कराने व जांच कराने पर प्रायोगिक समस्या कम होयेगी।

(2) छात्रों को उपकरणों की पहचान का प्रशिक्षण देने पर उनकी उपकरणों सम्बन्धी समस्या कम हो जायेगी।

(3) अध्यापकों द्वारा छात्रों गलतियाँ छात्रों को बताकर उन्हे ठीक करा कर उनकी समस्या दुर करें।

(4) छात्रों द्वारा गलती करने पर उनको दण्ड देने पर उनकी गलतियों में कमी आयेगी।

4. क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना कि छात्रों को प्रायोगिक कार्य कराये तथा उपकरणों का ज्ञान कराये तथा उनको उपयोग में लेना सीखाये ताकि उनकी गलतियों में कमी हो जायेगी

का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से सिखा जा सकता है –

क्र.स.	क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1.	प्रायोगिक अध्ययन में किये जाने विधिवत कार्यों की सूची तैयार करना।	सहयोगियों से विचार विमर्श करे	पाठ्यक्रम पाठ्रूपुस्तके	एक सप्ताह
2.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु लिखित कार्यों का चयन करना।	शिक्षण अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके	समय सारणी	एक सप्ताह
3.	चयनित उपकरणों के क्रम को निर्धारित करके	सहयोगियें से विचार विमर्श करके	समय सारणी	एक सप्ताह
4.	चयनित उपकरणों को एक एक करके देखना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	समय सारणी	एक सप्ताह
5.	परिकल्पना में अभिव्यक्ति सुझावों को क्रियान्वित करना।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	समय सारणी	एक सप्ताह

5. परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से बालकों की प्रायोगिक समस्या में कमी आई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान को उपरोक्त प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागु करने पर छात्रों के द्वारा की जाने वाली प्रायोगिक कार्यों में उपकरणों की समस्या में व्याप्त कमी आयेगी। अतः इन उपायों को उपकरणों सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

यदि प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से सकारात्मक परिणाम नहीं मिलते तो दुसरी, तीसरी इसी प्रकार की आगामी परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सकता है।

श्रीमती आरती गुप्ता
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या :–** कक्षा 11 के जीव विज्ञान के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की प्राणी विज्ञान प्रयोगशाला कक्ष में प्रयोग करने में अरूचि की प्रवृति का अध्ययन करना।

2. **समस्या का सीमांकन :–** रा. उ. मा. वि., मुरलीपुरा, जयपुर के कक्षा – 11 वीं के विद्यार्थियों की प्रयोगशाला जीव विज्ञान के कक्ष में प्रयोग करने में अरूचि दिखाना।

क्र.स.	संभावित कारण	साक्ष्य
1.	विषय अध्यापक प्रयोगशाला में प्रयोग हेतु विद्यार्थियों पर बल नहीं देते।	शिक्षक का अनुभव
2.	प्राणी विज्ञान प्रयोगशाला में उचित प्रादर्शो का अभाव	शिक्षक का अनुभव
3.	विद्यार्थियों हेतु प्रयोगशाला में उचित अध्ययन सामग्री का अभाव	शिक्षक द्वारा स्वयं छात्रों से पूछताछ कर पता लगाया।
4.	विद्यालय में प्रयोगशाला में जाने हेतु कालांश ना होना।	अध्यापक के अनुभव पर आधारित

क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. विषयाध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को जीव–विज्ञान प्रयोगशालाा कक्ष में प्रयोग करने हेतु उचित मार्गदर्शन एवं बल देने पर विद्यार्थी प्रयोगशाला में प्रयोग करने में रूचि दिखायेंगे।
2. विद्यालय में प्राणी विज्ञान से संबंधित प्रादर्शो की सही व्यवस्था करवाकर छात्रों में प्रयोगशाला में प्रयोग करने की रूचि को विकसित किया जा सकता है।
3. प्रयोगशाला कक्ष मे उचित अध्ययन सामग्री की व्यवस्था करवाकर विद्यार्थियों द्वारा प्रयोगशाला में प्रयोग की रूचि विकसित की जा सकती है।
4. विद्यालय में प्रयोगशाला में प्रयोग हेतु अतिरिक्त कालांश लगाकर भी छात्रों में प्रयोगशाला में प्रयोग हेतु रूचि विकसित की जा सकती है।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना में शिक्षको द्वारा विद्यार्थियों को प्रयोगशाला का महत्व बताकर तथा प्रयोगशाला मे प्रयोग हेतु बल देकर उनकी प्रयोगशाला मे प्रयोग करने मे अरूचि को दूर किया जा सकता है का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1. शिक्षक विद्यार्थियों को प्रयोगशाला कक्ष के बारे मे जानकारी देगा तथा उसका महत्व बताएगा।	सहयोगियों के विचार विमर्श से	पाठ्यपुस्तक	1 दिन
2. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु विद्यालय में उचित प्रयोगशाला कक्ष की व्यवस्था करवायेगा।		सूची	1 सप्ताह
3. विद्यार्थियों के अनुरूप प्रयोगशाला कक्ष के आवश्यक सामग्री जैसे – पुस्तकें, प्रादर्श :– जैसे – पाइला, स्कॉलिओडॉन और प्रयोगशाला उपकरण, सुक्ष्मदर्शी, पेट्रीडिश आदि की व्यवस्था करवायेगा	शिक्षण अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके	सूची	1 सप्ताह
4. विद्यालय में प्रयोगशाला हेतु कालांश लगवायेगा तथा सभी विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में प्रयोग करने हेतु भेजा जायेगा।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	समयसारणी	2 दिन
5. परिकल्पना में अभिक्रमित सुझावों को क्रियांवित करना।	सूची सारणी एवं विश्लेषण		1 दिन

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से विद्यार्थियों की प्रयोगशाला कक्ष मे प्रयोग करने की प्रवृति में विकास हुआ है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर विद्यार्थियों में विकास हुआ है। अतः इन उपायो को विद्यार्थियों की प्रयोशाला में प्रयोग करने में अरूचि दिखाने की प्रवृति को दूर करने हेतु प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती भारती शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या**– विद्यार्थियों को प्रयोग के दौरान उपकरणों का सन्तोषजनक उपयोग न करना।

2. **समस्या का सीमांकन**– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, हाथौज, जयपुर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों द्वारा भौतिक विज्ञान के सप्तम् कालांश में प्रायोगिक उपकरणो ंका उपयोग न किया जाना।

3. **संभावित कारण**–

क्रमांक	कारण	साक्ष्य
1.	शिक्षक का भौतिक विज्ञान के प्रयोग के दौरान उपकरणों के उपयोग पर बल नहीं देना।	शिक्षक का अनुभव
2.	विद्यालय में भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला में उपकरणों का अभाव होना।	प्रयोगशाला की सही व्यवस्था न होना।
3.	छात्रों के पास उपकरणों के उपयोग का अनुभव नहीं होना।	शिक्षक छात्रों से पूछताछ कर पता लगायेगा।
4.	शिक्षक द्वारा प्रयोग के दौरान उपकरणों को प्रस्तुत न करना।	अध्यापक के अनुभव पर आधारित।

4. **क्रियात्मक परिकल्पनाएं**–
   - i. प्रयोग के दौरान उपकरणों का उपयोग करने पर बल देने से छात्र प्रायोगिक उपकरणों का प्रयोग करने लगेंगें।
   - ii. प्रयोगशाला में उपकरणों की सही व्यवस्था करवाने से छात्र प्रायोगिक उपकरणों का प्रयोग करने लगेंगें।
   - iii. छात्रों को उपकरणों का सही प्रकार से उपयोग करना सिखाने पर छात्र प्रायोगिक उपकरणों का प्रयोग करने लगेंगें।
   - iv. शिक्षक द्वारा प्रयोग के दौरान उपकरणों को प्रस्तुत करने पर छात्र प्रायोगिक उपकरणों का प्रयोग करने लगेंगें।

5. **क्रियात्मक अभिकल्प**– प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की ''प्रयोग के दौरान उपकरणों का उपयेाग करने पर बल देकर देने से छात्र प्रायोगिक उपकरण्एाों का प्रयोग करने लगेंगें'' का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढ़ंग से लिखा जा सकता है–

क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
• भौतिक विज्ञान का शिक्षक विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों की जानकारी लेगा।	भौतिक कक्ष में सूचि बनायेगा।	प्रयोगशाला के उपकरणों की लिस्ट द्वारा	1दिन
• आवश्यक उपकरणों की व्यवसाि करेगा।	कक्षा 11 के पाठ्यक्रम से संबंधित सूचि बनायेगा।	पाठ्यक्रम	2 दिन
• क्रियात्मक अनुसंधान हेतु उपकरणों का चयन करेगा।	शिक्षण–अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके।	पाठ्यपुस्तक	2 दिन
• चयनित उपकरणों के प्रयोग क्रम को निर्धारित करेगा।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्य पुस्तक	1 दिन
• चयनित उपकरणों का प्रयोग प्रत्येक बच्चें से करवायेगा।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्य पुस्तक	2 सप्ताह
• परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों को क्रियान्वित करना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्य पुस्तक	2 सप्ताह

- **परिणाम**– परिकल्पना से वर्णित सुझावों से बच्चें भौतिक विज्ञान के प्रयोगशाला उपकरणों का उपयोग करने लगे है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।
- **सामान्य निष्कर्ष**– क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है, कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों द्वारा प्रायोगिक उपकरणों के उपयोग में वृद्धि हुई है। अतः इन उपायों को प्रायोगिक उपकरणों के उपयोग संबंधी कमी को दूर करने के लिए प्रभावी स्वीकार किया जा सकता है।

  यदि प्रथम परिकल्पना को परीक्षण से सकारात्मक परिणाम नहीं मिलते तो इस प्रकार की आगामी दूसरी, तीसरी, चौथी परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सकता है।

श्रीमती मुकेश कुमारी
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **क्रियात्मक अनुसधांन की समस्या :**—छात्र छात्राओं द्वारा विद्यालय पुस्तकालय में अध्ययन करने में अरूचि की प्रवृति का अध्ययन करना।

2. **समस्या का सीमांकन :**—राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मुरलीपुरा, जयपुर के कक्षा – 12 वी के विद्यार्थियों की पुस्तकालय में अध्ययन करने में अरूचि दिखाना।

संभावित कारण	साक्ष्य
1. शिक्षक पुस्तकालय में अध्ययन हेतु विद्यार्थियों पर बल नहीं देते।	शिक्षक का अनुभव
2. विद्यालय में उचित पुस्तकालय कक्ष का अभाव।	शिक्षक का अनुभव
3. विद्यार्थियों हेतु पुस्तकालय में उचित अध्ययन सामग्री का अभाव।	शिक्षक द्वारा स्वयं छात्रो से पुछताछ कर पता लगाया
4. विद्यालय में पुस्तकालय में अध्ययन हेतु कालांश ना होना।	अध्यापक के अनुभव पर आधारित

क्रियात्मक परिकल्पना :

1. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को पुस्तकालय में अध्ययन हेतु बल देने पर छात्र पुस्तकालय में अध्ययन करने लगेंगे।
2. विद्यालय में पुस्तकालय कक्ष की सही व्यवस्था करवाकर छात्रों में पुस्तकालय में अध्ययन की रूचि विकसित की जा सकती है।
3. पुस्तकालय में उचित अध्ययन सामग्री की व्यवस्था करवाकर विद्यार्थियों द्वारा पुस्तकालय में अध्ययन की रूचि विकसित की जा सकती है।
4. विद्यालय में पुस्तकालय में अध्ययन हेतु कालांश लगाकर भी छात्रों में पुस्तकालयों में अध्ययन हेतु रूचि विकसित की जा सकती है।

क्रियात्मक अभिकल्प : –

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना में शिक्षको द्वारा विद्यार्थियों को पुस्तकालय का महत्व बताकर तथा पुस्तकालय अध्ययन हेतु बल देकर उनकी पुस्तकालय में अध्ययन करने में अरूचि को दूर किया जा सकता है, का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प हो निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्रियाएँ	विधि	सागग्री	अवधि
1. शिक्षक विद्यार्थियों के बारे में जानकारी देगा तथा उसका महत्व बताएगा।	सहयोगियों के विचार विमर्श से	पाठ्य पुस्तक	1 दिन
2. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु विद्यालय में उचित पुस्तकालय कक्ष की व्यवस्था करवाएगा।	शिक्षक अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके	सूची	1 सप्ताह
3. विद्यार्थियों के अनुरूप पुस्तकालय में आवश्यक अध्ययन सामग्री यथा पुस्तकें पत्र–पत्रिकाएँ, अखबार बल साहित्य इत्यादि की व्यवस्था करवाऐगा ।	सहयोगियों के विचार विमर्श से	सूची	1 सप्ताह
4. विद्यालय में पुस्तकालय हेतु कालांश लगवागएगा तथा सभी विद्यार्थियों को पुस्तकालय में अध्ययन हेतु भेजा जाऐगा।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	समय सारणी	2 दिन
5. परिकल्पना में अभिक्रमित सुझावों को क्रियान्वित करना।	सूची सारणी एवं विश्लेषण		1 दिन

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से विद्यार्थियों की पुस्तकालय में अध्ययन करने की प्रवृति में विकास हुआ है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानो के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर विद्यार्थियों की पुस्तकालय में अध्ययन करने की प्रवृति में विकास हुआ है। अतः इन उपायों को विद्यार्थियों की पुस्तकालय में अध्ययन करने में अरूचि दिखाते हैं।

श्री मनीष सैनी
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान :

1. **क्रियात्मक अनुसंधान**:– छात्र–छात्राओं द्वारा विद्यालयी सामुदायिक गतिविधियों में अरूचि दिखाना।
2. **समस्या का सीमांकन**:– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झोटवाड़ा, जयपुर के कक्षा 9 के छात्र–छात्राओं का विद्यालयी सामुदायिक गतिविधियों में अरूचि दिखाना।
3. **संभावित कारण** :–

	कारण	**साक्ष्य**
(i)	विद्यालय में सामुदायिक गतिविधियों का आयोजन कम होना।	शिक्षक का अनुभव
(ii)	शिक्षकों के द्वारा प्रतिबालक प्रतिभागिता को नियमित न बनाना	शिक्षक का स्वयं का अनुभव
(iii)	शिक्षक स्वयं कार्यक्रमों के प्रति उदासीन रहते हैं।	शिक्षक का अनुभव
(iv)	कुछ विद्याथ्रियों का अर्न्तमुखी व्यवहार	शिक्षक ने स्वयं छात्रों से बातचीत कर जाना

4. **क्रियात्मक परिकल्पना**:–
   (i) विद्यालय में अधिक से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाकर प्रति बालक प्रतिभागिता के निर्देश देकर उन्हें कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
   (ii) सामुदायिक कार्यक्रमों में भाग न लेने वाले छात्रों की सूची तैयार कर उन्हें प्रतिभागिता के लिए प्रेरित किया जा सकताा है।
   (iii) शिक्षक स्वयं विद्यालयी गतिविधियों में प्रतिभागिता दिखाकर बालकों को कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
   (iv) अर्न्तःमुखी व्यवहार के बालकों से बात करके उनकी रूचियों के अनुरूप कार्यक्रमों का आयोजन कर प्रतिबालक प्रतिभागिता को बढ़ाया जा सकता है।
5. **क्रियात्मक अभिकल्प**:– प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की विद्यालय में अधिक से अधिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाकर प्रति बालक प्रतिभागिता के निर्देश देकर उन्हें कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकताा है का परीक्षण करने के लिये तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्पन को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

	क्रियायें	विधि	समग्री	अवधि
(i)	विद्यालय में आयोजित किये जा सकने वाले कार्यक्रमों की सूची तैयार करना	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	पूर्व में आयोजित कार्यक्रमों की सूची देखकर	1 सप्ताह
(ii)	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु की जाने वाली गतिविधियों की सूची तैयार करना	स्हयोगियों से विचार विमर्श करके		5 दिन
(iii)	कार्यक्रमों में प्रदर्शन हेतु कभी भाग न लेने वाले छात्रों का नामांकन करना	विद्यार्थियों से बात करके	पूर्व में आयोजित कार्यक्रमों की प्रतिभागी सूची देखकर	7 दिन
(iv)	कार्यक्रम का आयोजन कर प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पारितोषिक देना	प्रधानाध्यापक एवं सहयोगी से बातचीत करके	प्रधानाध्यापक के सहयोग से पारितोषिक की व्यवस्था कर	3 सप्ताह

परिणाम:

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से विद्यार्थियों की रूचि सामुदायिक कार्यक्रमों में दिखाई देने लगी है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष:

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर सामुदायिक कार्यक्रमों में बालकों की रूचियों में वृद्धि हुई है। अतः इन उपायों को बालकों की सामुदायिक गतिविधि में अरूचियों को दूर करने हेतु प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती मीनाक्षी शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या –

सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण में छात्रों द्वारा रूचि न लेना।

समस्या का सीमांकन –

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मुरलीपुरा, जयपुर के कक्षा 9 के छात्रों द्वारा सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षिणक भ्रमण में छात्रों द्वारा रूचि न लेना।

संभावित कारण :–

	कारण	साक्ष्य
1.	विद्यार्थियों का सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण में रूचि न लेना	छात्रों का कक्षा में अन्तक्रिया न करना
2.	विद्यालय द्वारा सामाजिक विज्ञान से विज्ञान से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन न करना	शिक्षक का अवलोकन
3.	विद्यालय में सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण पर न जाने पर भी छात्रों को दण्डित न करना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता

क्रियात्मक परिकल्पना –

1. शिक्षक द्वारा विद्यालय में सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण की उचित व्यवसाी करकें छात्रों को शैक्षणिक भ्रमण की उपयोगिता के बारे में बताकर छात्रों को उस विषयवस्तु के अन्तर्गत लाभान्वित किया जा सकता है
2. विद्यालय द्वारा अधिक से अधिक छात्रों को सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाकर छात्रों की सामाजिक विज्ञान मे रूचि जागृत कि जा सकती है तथा उनके ज्ञान को स्थाई बनाया जा सकता है।
3. छात्रों द्वारा सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण में छात्रों द्वारा रूचि न लेने पर अध्यापक द्वारा दण्ड देकर छात्रों को रूचि लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

क्रियात्मक अभिकल्प –

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की शिक्षकों द्वारा छात्रों को विद्यालय में सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण की उचित व्यवस्था करके छात्रों को शैक्षणिक भ्रमण की उपयोगिता के बारे में बताकर छात्रों को उस विषयवस्तु के अन्तर्गत लाभान्वित किया जा सकता है परीक्षण करने के लिए तैयार किए गए क्रात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्र.स.	क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1.	शिक्षक द्वारा विद्यालय में विद्यालय प्रबन्धक को सूचित कर उनसे शैक्षणिक भ्रमण की अनुमति प्रदान करवाना।	शिक्षक द्वारा अन्य शिक्षकों से शैक्षणिक भ्रमण के लिए परामर्श करना	प्रबन्धक कार्य	1 सप्ताह
2.	शिक्षक द्वारा सभी विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण का स्थान तथा उसकी उपयोगिता के बारे में बताना	शैक्षणिक भ्रमण का पूर्ण कार्यक्रम आयोजित करना	समय सारण का आयोजन करना	2 सप्ताह
3.	शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत सभी विद्यार्थियों के व्यवहार का अध्ययन करना	सभी सहयोगी शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों पर नियन्त्रण के लिए परामर्श करना	नियन्त्रण तथा व्यवहार अध्ययन	2 दिवस
4.	शैक्षणिक भ्रमण के स्थान का विस्तारपूर्वक शिक्षक द्वारा वर्णन किया जाये	विद्यार्थियों द्वारा उस स्थान के महत्व का जिज्ञासापूर्वक श्रवण किया जायें	विषयपरक सूचि	1 दिवस

परिणाम –

परिकल्पना में वर्णित सुझावों के द्वारा छात्रों ने समाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण में अत्यधिक रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सामान्य निष्कर्ष –

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सौपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा सामाजिक विज्ञान के विषय से सम्बन्धित शैक्षणिक भ्रमण में अत्यधिक रूचि लेने लगे।

श्रीमती मोनिका भारद्वाज
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या**– छात्र–छात्राओं के द्वारा भूगोल के प्रायोगिक कार्यों में अरूचित दिखाना।
2. **सीमांकन**– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोबनेर जिला जयपुर की कक्षा बारहवीं के छात्र–छात्राओं का भूगोल विषय के प्रायोगिक कार्यो में अरूचि दिखाना।

3. **संभावित कारण**–

कारण	साक्ष्य
1. शिक्षक का भूगोल के प्रयोग के दौरान उपकरणों के उपयोग पर बल नहीं देना।	शिक्षक का अनुभव
2. विद्यालय में भूगोल प्रयोगशाला में उपकरणों का अभाव होना।	प्रयोगशाला की सही व्यवस्था नहीं होना।
3. छात्रों के पास उपकरण्णों के प्रयोग का अनुभव नहीं होना।	शिक्षक छात्रों से पूछताछ कर पता लगाएगा।
4. शिक्षक द्वारा प्रयोग के दौरान उपकरणों को प्रस्तुत न करना।	अध्यापक के अनुभव पर आधारित।

4. **क्रियात्मक परिकल्पनाएँ**–
   - **i.** प्रयोग के दौरान उपकरणों का उपयोग करने पर बल देने से छात्र प्रायोगिक कार्यों में रूचि लेने लगेंगें।
   - **ii.** प्रयोगशाला में उपकरणों की सही व्यवस्था करवाने से छात्र प्रायोगिक कार्यों में रूचि लेने लगेंगें।
   - **iii.** छात्रों को उपकरणों का सही प्रकार से उपयोग करना सिखाने पर छात्र प्रायोगिक कार्यों में रूचि लेने लगेंगें।
   - **iv.** शिक्षक द्वारा प्रयोग के दौरान उपकरणों को प्रस्तुत करने पर छात्र प्रायोगिक कार्यों में रूचि लेने लगेंगें।

5. **क्रियात्मक अभिकल्प**– ''प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की प्रयोग के दौरान उपकरणों का उपयेाग करने पर बल देने से छात्र प्रयोगिक कार्यों में रूचि लेने लगेंगें'' का परीक्षण करने के लिए किए गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढ़ंग से लिखा जा सकता है।

क्रमांक	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1.	भूगोल विषय का शिक्षक विद्यालय में उपलब्ध उपकरणों की जानकारी लेगा।	भूगोल कक्ष में सूची बनाएगा।	प्रयोगशाला में उपलब्ध उपकरणों की लिस्ट द्वारा	1 दिन
2.	आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था करेगा।	कक्षा 12 के पाठ्यक्रम से संबंधित सूची बनाएगा।	पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें	2 दिन
3.	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु उपकरणों का चयन करेगा।	शिक्षण–अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करे।	पाठ्यक्रम, पाठ्पुस्तकें	2 दिन
4.	चयनित उपकरणों के प्रयोग क्रम को निर्धारित करेगा।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्यक्रम, पाठ्पुस्तकें	1 दिन
5.	चयनित उपकरणों का प्रयोग प्रत्येक बच्चें से करवायेगा।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्यक्रम, पाठ्पुस्तकें	2 सप्ताह

परिणाम–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से प्रयोग के दौरान बच्चे प्रायोगिक कार्यो में रूचि दिखाने लगे है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा प्रयोग के दौरान प्रायोगिक कार्यों में रूचि।

अतः इन उपायों को प्रायोगिक कार्यों में रूचि न दिखाने की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए प्रभावी स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती पिंकी शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. क्रियात्मक अनुसंधान की समस्या :–

1. **समस्या :–** छात्रों के द्वारा त्रिकोणमितीय सूत्रों का उपयोग नहीं करना।
2. **समस्या का सीमांकन :–** राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11 के छात्रों द्वारा त्रिकोणमितीय गणित के सूत्रों का उपयोग न करना।

संभावित कारण	साक्ष्य
शिक्षक त्रिकोणमिती के सूत्रों के प्रयोग पर बल नहीं देते है।	अवलोकन
छात्रों के द्वारा त्रिकोणमिती सूत्रों को याद न करना।	अवलोकन, परीक्षण, साक्षात्कार
अभ्यास पुस्तिकाओं में छात्रों द्वारा गलत सूत्र लिखने पर अध्यापक का ठीक न करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं के अवलोकन द्वारा
गलत सुत्रों लिखने पर छात्र को दण्डित न करना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता

क्रियात्मक परिकल्पना :–

1. शिक्षको द्वारा त्रिकोणमिती के सूत्रो पर बल देने से छात्र द्वारा त्रिकोणमिती के सुत्रों के प्रयोग का बढाया जा सकता है।
2. छात्रों द्वारा त्रिकोणमिती के सूत्रो को याद करके भी त्रिकोणमिती के सूत्रों के प्रयोग को बढाया जा सकता है।
3. अध्यापक पुस्तिकाओं में गलत सूत्रों को अध्यापक द्वारा ठीक करके भी त्रिकोणमिती के सूत्रों को प्रयोग को बढाया जा सकता है।
4. गलत सूत्र लिखने पर छात्रों को समझाकर उदाहरण द्वारा भी त्रिकोणमिति के सुत्रों के प्रयोग को बढाया जा सकता है।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

प्रथम परिकल्पना कि ''शिक्षको द्वारा त्रिकोणमिती के सूत्रों पर बल देने से छात्र द्वारा त्रिकोणमिती के सूत्रों को प्रयोग को बढाया जा सकता है।'' का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

क्रियाएँ	विधि	सामग्री	अवधि
1. गणित में किये जाने वाले लिखित कार्यो की सूची तैयार करेंगे।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके	पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तके	1 सप्ताह
2. क्रियात्मक अनुसंधान हेतु लिखित कार्यो का चयन करना।	शिक्षण अधिगम क्रिया कलापों की विवेचना करना	समय सारणी	1 सप्ताह
3. चयनित लिखित कार्यो के क्रम को निर्धारित करना।	सहयोगियों से विचार विमर्श करके		1 सप्ताह
4. शिक्षक द्वारा छात्रों को लिखित कार्यकरवाकर	जाँच करके	पाठ्य पुस्तक	2 सप्ताह

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से त्रिकोणमिती सूत्रों को छात्र याद कर रहे है। तथा उन्हें प्रयोग में ले रहे है।

सामान्य निष्कर्ष :–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा की जाने वाली गणित में सूत्रों का प्रयोग करने पर बल मिला है। यदि प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से सकारात्मक परिणाम नहीं मिलते तो दूसरी, तीसरी, इसी प्रकार आगामी परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सकता है।

श्रीमती नलिनी शर्मा
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

समस्या का चुनावः– छात्रों का खेल के कालाशं में विद्यालय से भाग जाना।

समस्या का सीमाकंनः– टैगोर सी. सै. स्कूल जयपुर के कक्षा 7 छात्रों का खेल के कालाशं में विद्यालय से भाग जाने के कारण का अध्ययन करना तथा उनमें सुधार करना।

1. संभावित कारणः–

	कारण	**साक्ष्य**
1.	विद्यालय में आवश्यक खेल सामग्री का अभाव	शिक्षक का स्वयं का अवलोकन
2.	विद्यार्थियों का खेल में रूचि न लेना	छात्रों का कक्षा में अन्तः क्रिया न करना
3.	शिक्षक की खेल गतिविधियों के प्रति उदासीनता	छात्रों व शिक्षक के मध्य बातचीत से
4.	विद्यालय में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन न करना	शिक्षक का अवलोकन
5.	विद्यालय से भाग जाने पर छात्रों को दण्डित न करना	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता

2. क्रियात्मक परिकल्पनाः–

1. शिक्षक द्वारा विद्यालय में उचित खेल सामग्री की व्यवस्था करके छात्रों को खेल कालांश में भागने से रोका जा सकता है।
2. विद्यालय में मिनी सेमिनार का आयोजन करके छात्रों के खेल कालांश में भागने से रोका जा सकता है।
3. शिक्षक की उदासीन खेल के प्रति उदासीनता को कम करके छात्रों को खेल कालाशं में भागने से रोका जा सकता है।
4. विद्यालय में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करके छात्रो को खेल कालांश में भागने से रोका जा सकता है।
5. अध्यापक द्वारा छात्रों के लिए दण्ड की उचित व्यवस्था करके छात्रों के खेल कालांश में भागने से रोका जा सकता है।

3. क्रियात्मक अभिकल्पः–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना में छात्रों की खेल कालांश में भाग जाने की समस्या की जाँच करने पर खेल कालांश में भाग जाने वाली कठिनाइयां कम हो जायेगी छात्रों का परीक्षण करने के लिए तैयार किये गये क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता हैं–

	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1.	विद्यालय में आयोजित पूर्व खेलों की सूची तैयार करना।	पूर्व सूचियाँ का निरीक्षण करके	पूर्व में आयोजित कार्यक्रम की सूची देखकर	4 सप्ताह
2.	विद्यार्थियों की रूचि के खेलों की सुची तैयार करना	विद्यार्थियों से बातचीत करकें	शिक्षक छात्रों से बातचीत से करके	1 सप्ताह
3.	आवश्यक खेल सामग्री की व्यवस्था करना	प्रधानाध्यापक के सहयोग से		1 सप्ताह
4.	खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करना	साथी अध्यापकों से विचार–विमर्श	पूर्व सूची देखकर	1 सप्ताह
5.	प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी छात्रों को पुरूष्कृत करना	प्रधानाध्यापक के सहयोग से	प्रधानाध्यापक के सहयोग से पारितोषित की व्यवस्था कर	1 सप्ताह

परिणामः– परिकल्पना में वर्णित सुझावों से छात्रों के खेल कालांश में भागने की प्रवृत्ति में कमी भाई है अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

सामान्य निष्कर्षः–

क्रियात्मक अनुसंधान के उपरोक्त वर्णित सौपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के खेल कालांश में भागने की प्रवृत्ति में कमी भाई है अतः इन उपायो को खेल कालांश में छात्रों के भागने की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती पुष्पा कुमावत
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

क्रियात्मक अनुसन्धान की समस्या –

अंग्रेजी के छात्रों द्वारा अंग्रेजी में सम्प्रेषण का संतोषजनक प्रयोग न करना।

समस्या का सीमांकन –

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मुरलीपुरा, कक्षा 7 के छात्रों द्वारा अंग्रेजी में सम्प्रेषण का संतोषजनक ना होना।

संभावित कारण –

	कारण	साक्ष्य
1.	छात्रों द्वारा सम्प्रेषण में लापरवाही करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं और मौखिक प्रश्न कर अवलोकन।
2.	छात्रों में शब्द पहचान की योग्यता में कमी।	अवलोकन, परीक्षण व साक्षात्कार
3.	उचित सम्प्रेषण ना करने पर छात्रों को निर्देश ना देना।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्ता।
4.	अभ्यास पुस्तिकाओं में तथा मौखिक में अध्यापक द्वारा वर्तनी त्रुटियों को ठीक न करना।	अभ्यास पुस्तिकाओं के अवलोकन द्वारा।

क्रियात्मक परिकल्पना –

1. छात्रों द्वारा सम्प्रेषण करने में लापरवाही करने पर उन्हें उचित निर्देश देने पर छात्र सही अंग्रेजी सम्प्रेषण करने लगेंगे।
2. छात्रों में शब्द पहचानने की योग्यता विकसित करने के पर उनमें सम्प्रेषण क्षमता में सुधार होने पर सही अंग्रेजी सम्प्रेषण करने लगेंगे।
3. उचित सम्प्रेषण ना करने पर छात्रों को निर्देश देकर अंग्रेजी में सम्प्रेषण क्षमता विकसित कर छात्र सही अंग्रेजी सम्प्रेषण करने लगेंगे।

1. विद्यार्थियों द्वारा वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ करने पर अध्यापक द्वारा ठीक कराने पर छात्र सही अंग्रेजी सम्प्रेषण करने लगेंगे।

क्रियात्मक अभिकल्प –

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की ''छात्रों द्वारा सम्प्रेषण करने में लापरवाही करने पर उन्हें उचित निर्देश देने पर छात्र सही अंग्रेजी सम्प्रेषण करने लगेंगे'' का परीक्षण करने के लिए तैयार किए गए क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढंग से लिखा जा सकता है।

	क्रियाएँ	विधियाँ	साधन	समय
(1)	अंग्रेजी में किए जा सकने वाले लिखित कार्यों व मौखिक कार्यों की सूची तैयार करना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तक	एक सप्ताह
(2)	क्रियात्मक अनुसन्धान हेतु लिखित व मौखिक कार्यों का चयन करना।	शिक्षण–अधिगम क्रियाकलापों की विवेचना करके।	समय–सारणी	एक सप्ताह
(3)	चयनित लिखित व मौखिक कार्यों को एक–एक करके देना।	सहयोगियों से विचार–विमर्श करके।	–	एक सप्ताह
(4)	परिकल्पना में अभिकल्पित सुझावों को क्रियान्वित करना।	–	–	तीन सप्ताह

परिणाम –

परिकल्पना में वर्णित सुझावों से सम्प्रेषण करने में वृद्धि हुई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष –

क्रियात्मक अनुसन्धान के उपरोक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रथम परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने पर छात्रों के द्वारा की जाने वाली अंग्रेजी के सम्प्रेषण की कमी या संतोषजनक प्रयोग न करने को दूर करने के लिए प्रभावी स्वीकार किया जा सकता है।

श्रीमती रंजना पारीक
(व्याख्याता) शिक्षा विभाग
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

क्रियात्मक अनुसंधान

1. **क्रियात्मक के अनुसंधान की समस्या** –भूगोल विषय में प्रश्न पूछने पर छात्रों का उत्तर न देना।

2. **समस्या का सीमांकन**– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय झोटवाड़ा में कक्षा–8 के छात्रों द्वारा भुगोल विषय में प्रश्न पूछने पर उत्तर देने में समर्थ न होना।

3. **सम्भावीत कारण–**

क्र.सं.	कारण	सक्ष्य
1.	शिक्षक छात्रों से प्रश्न पूछने पर बल नहीं देते।	शिक्षक का अनुभव।
2.	छोत्रों की भूगोल विषय में रूचि नहीं हैं।	अध्यापक द्वारा स्वयं अनुभव किया गया।
3.	विद्यार्थी को उत्तर याद रख पाने में कठिनाई होती है।	अवलोकन व अध्यापकों से वार्त्ता।
4.	विद्यार्थी अध्यापक द्वारा दिये गये गृहकार्य का नहीं करते।	अध्यापक द्वारा स्वयं अनुभव किया गया।

क्रियात्मक अभिकल्प–

प्रथम क्रियात्मक परिकल्पना की छात्रों को पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछकर व भूगोल विषय के प्रश्नों में रूचि लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए छात्रों को तैयार किए गए। क्रियात्मक अभिकल्प को निम्न ढ़ंग से लिखा जा सकता है।

क्रियात्मक परिकल्पना–

1. शिक्षकों द्वारा छात्रों से पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछकर व भूगोल विषय के प्रश्नों की कठिनाई को दूर कर किया जाएगा।
2. शिक्षक द्वारा छात्रों को भूगोल विषय के प्रश्नों में रूचि लेने के लिए प्रोत्साहित करके भूगोल विषय के प्रश्नों की कठिनाई को दूर किया जाएगा।
3. शिक्षक के द्वारा विद्यार्थी को विद्यालय में उपस्थित उपकरणों का प्रयोग करवाकर उत्तर याद रख सकेंगे।
4. शिक्षक द्वारा छात्रों को रूचिपूर्ण गृहकार्य देकर भूगोल विषय के गृहकार्य को करवाया जा सकेगा। व प्रश्नो को याद किया जा सकेगा

विधि	साधन	समर्य
अध्यापक रूचि न लेने वाले छात्रों की सूची बनाएगा।	पुछताछ प्रश्न	2 दिन
पूर्व में हो रहे अध्यापक के बारे में कुछ प्रश्न पूछेगा।	शूछताछ प्रश्न	2 दिन
अध्यापक द्वारा कोई रूचिपूर्ण क्रार्यक्रम आयोजित किया जाएगौ	सूची एवं सारणी	10 दिन
किस स्तर पर कौनसा पारितोषिक दिया जाये, उसकी सूची तैयार की जाएगी।	प्रधानाचार्य के पारितोषिक व्यवस्था के लिए आग्रह किया जाएगा।	1 दिन